आदर्श जैन

★

— श्री बशी

•

अनुवादक

रजन परमार

राष्ट्रभाषा रत्न

भावी पीढ़ी के तेजस्वी
जैनों के गठन, सवर्धन एवं उन्नति में
प्रेरक आज का प्राणवान
साहित्य

• • •

मूल्य बारह आना

महिमा प्रकाशन १९५६

प्रास्ताविक

' आदर्श जैन ' के प्रस्तावक श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन एम ए , हिंदी साहित्यके एक लब्धप्रतिष्ठित साहित्यिक एव कवि हैं, साथ ही बम्बईसे प्रकाशित सचित्र साप्ताहिक 'धर्मयुग' के सहसपादक भी। हिंदी साहित्यके क्षेत्रमें आपकी तपश्चर्या, रसज्ञता, मार्मिकता एवं भाव-व्यजना व्यक्त करनेकी अनूठी शैली प्रसिध्द है । साथ ही गुर्जर साहित्यकी सेवा भी आप पूरी तन्मयता, लगन एवं अपूर्व निष्ठासे कर रहे हैं। आपने गुजराती तथा अंग्रेजीकी कई उत्तमोत्तम कृतियोंका हिंदी भाषातर किया है। आपकी कृतियोंमें अंग्रेजीसे भाषातरित ' अब्राहम लिंकन ' एव ' मुक्तिदूत ' प्रमुख हैं।

• • •

श्री रजन परमारकी मातभाषा गुजराती होते हुए भी, हिदीमें ऐसी सुन्दर रचना प्रस्तुत करनेके लिए उन्हें बधाई देना चाहता हूं। हिदीके प्रति उनके मनमें जो लो लगन है, वह इस बातकी सूचक है, कि भाषा और सस्कृतिकी विविध व्यजनाओंमें व्यक्त विशाल भारतीय आत्माकी आतर एकताकी प्रतीति उन्होंने पाई है, और उसे प्यार किया है। अखण्ड नूतन भारतके निर्माणमें, ऐसे मौन साधकोंके योगदानको म आदरकी दृष्टिसे देखता हूं।

× × ×

जन कोई जाति नहीं, सम्प्रदाय नहीं। यह 'जिन' मानी विजेताका माग ह। जड यानी पुग्दलकी पद-पदपर अवरोधक शक्तियाको पराभूत करता हुआ, जो आत्म-चतन्य परम स्वाधीन मुक्त जीवनकी ओर उत्तरोत्तर अग्रसर होता जाता है, वह जिन ह। और इस मागका जो अनुसरण करे वही जन ह। जहाँ रूढि ह सम्प्रदाय ह, बधी हुई लीक ह, अमुक लिखित शास्त्रका शब्द ही जहाँ अन्तिम ह, जहाँ दिगम्बर, श्वेताम्बर, हिन्दु, मुस्लिम, ईसाईका भद ह, जहाँ नग्नता, सवस्त्रता, पीछी-कमण्डल, मुँह पत्ती तथा रजोहरण आदि भेष और उपकरणके बाधा बन्धन अनिवार्य ह, वहाँ जिनमार्ग नहीं ह। जिनमार्ग तो अनेकान्तिक ह यह वस्तुको अनन्त गुण और पर्यायसे युक्त मानता ह। और वस्तुके इस स्वभावको ही वह धम मानता ह 'वस्तु स्वभावो धम्मो।' तो वस्तुके निसग स्वाधीन स्वभावको ही धम माननेवाला यह जिन माग, किसी भी एक शास्त्र-वचन लिंग, भष या लोकको अन्तिम या अनिवाय कसे मान सकता है? जिन-माग तो ठीक विज्ञानकी तरह ही वस्तुकी अनन्तता और उसकी अनन्त प्रगतिका हामी ह। लेकिन इस जिन-मागको जिन्होंने विरासतमें पाया है उन्होंने इसे भी अपनी कोठियों और तिजोरियोंमें बन्द अपनी सम्पदाकी तरह ही, अपनी एकान्त अधिकारकी वस्तु बनाकर रखनमें कोई कसर नहीं उठा रखी ह। कहना चाहता हूँ कि जो महावीरके अनुयायी तथा कथित श्रावक और साधु आज जन धमका ठेका लिये बठे ह, उनका जिन-मागसे, जिनेन्द्रके परम मुक्ति मागसे कोई दूर दूरका सम्बध भी नहीं ह। उनके खण्डन मण्डनकारी गुरुओं और शास्त्रोंने तीथकर महावीरकी अविरोध अनकान्तकी वाणीका कोबोरर चढाया ह, हम प्राणिमात्रकी दया पालनवाले हम पानी छान कर पीनवाले, अपनी तिजोरियोंके रास्ते आदमीका खून अनछना ही पी जात ह और हमारे मुँहपर

निम्नतक नहीं आती। तो हम, जो महावीरकी जयकारोंसे आसमान चीरते हैं, वे हम जनत्वके दम्भी अभिमानी तो महावीरकी महान् मुक्तात्माके हत्यारे हैं। हमने महावीरके परमतम मुक्तिके शासनको अपने मंदिरों और तिजोरियोंमें बंद करके रक्खा है, और उसके नामपर स्वार्थोंकी सौदागरी की है।

× × ×

जनत्वके इस दुर्घर्ष स्वरूपके सम्मुख, 'आदर्श जैन' के रूपमें, जिस सनातन, निर्बाध, सार्वकालिक सार्वदेशिक सच्चे जिन मानवका निरूपण भाई रजन परमारने किया है—मैं उनका अभिनंदन करता हूँ। मुझे आशा है कि मुक्तचेता समझदारों और जिज्ञासुओंके बीच उनकी यह पुस्तक आदर पायगी।

२३ दिसम्बर, ५६

गोविंद निवास,
सरोजिनी रोड,
विलेपारले (पश्चिम),
बम्बई-२४

—वीरेन्द्रकुमार जैन

श्री 'शरदेन्दु'

साहित्यरसिक मुनि श्रीभानुचद्रविजयजी 'शरदेन्दु' जैन साहित्यके ममज्ञ विद्यार्थी एव चरम तीर्थकर भगवान महावीर मार्गानुयायी श्रमण संस्कृतिके प्रशस्त पथपर अग्रसर होनेवाले एक पथिक है, जिनके रोम रोममें जिन वाणी हिलोर ले रही है, जो भौतिकवादी यत्रणाओंसे उत्पीडित विराट जनसमुदायको जिन-सदेशका अमीरस पिला कर सच्चा मानव बनानेके दृढ़ण कायम अहर्निश रत रहकर अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अनेकात तथा समन्वयका शखनाद गुजा कर निखिल भूमडलको पग पग पर चिर सनातन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश सुनाने की महत्वाकाक्षा रखते हैं। आप परम पूज्य प्रौढ प्रतापी सुरि सम्राट आचार्य श्री नेमिसूरीश्वरजीके पट्टधर शिष्य विद्वद्वर्य आचार्य श्री विज्ञान सूरीश्वरजीके शातमूर्ति पट्ट शिष्य आचार्य श्रीकुस्तुरसूरीश्वरजीके विद्वान शिष्य श्रीचद्रोदयविजयजीके शिष्य तथा पंन्यास श्री यशोभद्रविजयजीके दत्तक शिष्य है। श्रमणजीवनके प्रारम्भसे ही आपकी रुचि ज्योतिष शास्त्रके प्रति विशेष रही है—और वर्तमानमें आप उसपर काफी प्रभुत्व रखते हैं जिसके फलस्वरूप अभी अल्पावधि पूर्व ही आपको 'ज्योतिष विशारद' की पदवी प्रदान कर सम्मानित किया गया है। गुजराती भाषाके आप एक अच्छे एव नवोदित लेखक माने जाते है—आपकी 'संस्कार ज्योत १—२' 'व र पगा कथाओ 'सागरना मोती' 'नमदा सुदरी' आदि कृतिया प्रकाशित हो चुकी है। आप गुजराती, हिन्दी, अग्रजी प्राकृत तथा संस्कृत भाषाके ज्ञाता हैं। प्रस्तुत 'आदर्श जैन' प्रकाशित होकर प्रसारित होनेके लिए तैयार है इसका सारा श्रेय आप ही की अदभुत प्रेरणा को ही है यह कहनेमें हमें बडी खुशी होती है।

साहित्यसेवी—ज्योतिषविशारद मुनिश्री

भानुचन्द्रविजयजी महाराज

निवेदन

हममेंसे बहुतसे लोग भली भाँति जानते हैं कि जीवन यह कोई खेल नहीं बल्कि एक दुर्गम संग्राम है। प्रात, दोपहर एवं संध्यादि तीनों कालकी मृदुता, जीवन और मानवताके इच्छुक कोई विरले नरवीर ही इस संग्रामकी लीलाओंका आस्वाद कर सकते हैं।

अंग अंगमें अमीरसका संग्रह हो ऐसा मृदु-जीवन जिसमें कूट कूट कर भरा हो, सद्गुण तथा अवगुणोंको विच्छिन्न कर जो महान् आदर्शका सर्जन करता हो, निष्काम कर्मयोग, बुद्धिपूर्वक लिये गये संकल्पमें दृढता और सिद्धांतके लिए अडिग युद्ध तथा घोर तपश्चर्या करनेकी तेजस्विता जिसमें भरी हुई हो, जिसके नित्य जीवन तथा आध्यात्मिक जीवनके मानसमें कभी भेदभाव ही न हो और जिसका हृदय, प्रगतिमय और सत्यशील भावनाओंके बीच मंथन कर रहा हो वही नरशार्दूल इस संग्राममें विजयी बन सकता है।

अपने जीवनका गणित जय अथवा पराजयपर अवलम्बित न रखकर केवल उन्नत आशय सिद्धियोंके वरण हेतु ही जिसका लक्ष्य नित नय साहस एवं प्रवृत्तियोंकी ओर हो वही वीर है। इसे जीतनेका शंखनाद करनेवाला ही 'जैन' है। ऐसी एकाध प्रबल आत्मा ही कैसे भी सुदृढ, सुव्यवस्थित तथा सुनियंत्रित साम्राज्य, राष्ट्र और समाजकी नींव खोखली कर सकती है, कैसी भी विकटतम आध्यात्मकी पथरीली टेकरियों पर छलांग मारती हुई निर्दिष्ट स्थानपर पहुँच जाती है, सृष्टिकी कोई भी शक्ति अथवा सर्वभक्षी सत्ता भी उसके खौलते वीर्यको रोकनेमें असमर्थ ही सिद्ध होगी।

जग भीरु नहीं अपितु जीवन संग्राममें शांत चित्तसे सतत लडनकी कलासे अवगत एक बहादुर सैनिक है। कायरकी बला स्वप्नमें भी जैनात्माका स्पर्श न कर सके। स्थिरता-अचञ्चलता उसके लिए असह्य है। मृतावस्थामें जिंदा रहनकी, पेट काटकर जिंदगीके दिन बितानेकी अपेक्षा जैन भव्य मृत्युको ज्यादा महत्व देता है। ठीक वैसे सोये प्रत्येक स्थिति, प्रसंग अथवा सुखदुःखके अवसरोंपर भी सहास्य आशायुक्त मनस्थितिमें जरा भी मजुम्न न खो, आमोद प्रमोदमें भाग लेनवाला रसिक पुरुषसिंह अर्थात् जैन!

सम्पूर्ण आत्मविश्वास और निराग स्याद्वाद दृष्टि रखनेवाला कोई भी महान पुरुष 'जैन' ही है, 'जिन' का अनुयायी है। जैनको जातिका बंधन नहीं, समाजका बंधन नहीं, राष्ट्रका बंधन नहीं, अगर बंधन कोई है तो केवल एक—पूर्व परम्परागत 'जिनों' द्वारा उत्पादित सिद्धांत, नियम, आचार यम आदिकी मर्यादा!

* * *

आजसे ठीक अट्ठाईस वर्ष पूर्व श्री बंशी द्वारा आलेखित गुजराती कृति 'आदर्श जैन' की एक प्रति मुझे कहींसे रद्दीमें मिली तो उसकी भूमिकामें मैंने उपरोक्त विचार धाराको पढा और मैं पुलकित हो उठा। वास्तवमें देखा जाए तो आजका जैन अपने पूर्वजोंकी संस्कृति, इतिहास, समाज प्रणाली, व्यवसाय-कुशलता, दूरदर्शिता, बुद्धिमता एवं बहुत कुछको तिलाञ्जलि दे बैठा है। वह ऐसा भीरु बन गया है मानो नीलगाय! उसकी 'ईमानदारी, वीरता, सत्य-प्रियता, राष्ट्राभिमान और वाक्चातुर्य ये गुण तो आकाश कुसुमवत् हो गये। वह बन गया है पैसोंका पुजारी, भौतिकवादी युगका एकनिष्ठ गुलाम, आधुनिक चमक दमकका चहेता!

उसमें जगडुशाहकी दानवीरता न रही, भामाशाह-उदायन मेहताका राष्ट्रप्रेम न रहा, अभयकुमारकी बुद्धिमत्ता न रही, सम्राट् श्रेणिककी भक्ति न रही, हेमचन्द्राचार्यकी बहुश्रुतता न रही, वस्तुपाल तेजपाल की वात्सल्यभावना तथा वीरताका लोप हुआ। वह कीर्ति-यश तथा सम्पत्तिके लिए सब कुछ भूल चुका है।

आज वह लड़ रहा है, झगड़ रहा है। भाई भाईके खूनका प्यासा बन गया है। जाति भेद, सम्प्रदाय भेद, गोत्र भेद तथा मत भेद जैसी दुष्ट कृतियोंको अपना सगा साथी बनाकर काल भगवानके डमरूपर ताण्डव नृत्य कर रहा है— अपनी संस्कृति, इतिहास तथा उज्ज्वल पूर्व परम्पराओंकी अस्मिता मिटानेके लिए।

यह सब बन्द कर अपने वास्तविक स्थानका समझ, अपनी योग्यता अपने सिद्धान्तोंसे साक्षात्कार कर आत्मसंशोधन करे, विश्वबन्धुत्व, सौजन्यता, अहिंसा, अपरिग्रहका घर घर प्रचार करे, भगवान महावीरका सन्देश अखिल भूमण्डलमें गुंजावे। मानव धर्मकी पुनः स्थापना करे और इसीका करते-करते मिट जाए।

* * *

यही भावना लेकर मैंने 'आदर्श जैन' का हिन्दीमें अनुवाद करनेका साहस किया और उस समाजके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस समय मेरी यह प्रबल भावना है कि आजका जैन समाज छोटी-छोटी गुटबंदियोंको छोड़ दे, मुट्ठीभर प्रशंसकोंका परित्याग कर दे, संकुचित विचार-धाराकी दीवारें तोड़ दे और 'धर्म तथा अध्यात्म' के नाम पर चल रही उपहासात्मक प्रवृत्तियों तथा क्षुद्र पराक्रमोंसे विराजके दबकर 'कूपमडूक' वृत्तिको छोड़, टिड्डे बनते मानव समुदाय और धर्मकी वारिधिमें विशालता, विराटता, एवं उदारताके प्रवाहोंको मोड़ दे।

जिस धर्म समाज एवं कुल में जन्म लेकर मैं अपने
को कृतकृत्य समझता हूँ–उसी के गठन
संगठन संवर्धन एवं उन्नति के लिये
उत्तरदायी समाज के चरणों
में सादर समर्पित

—रतन परमार

प्रेम और सहिष्णुता - ,

मित्रों ! यह सदा याद रखना कि तक एव टीका–टिप्पणी से कभी ससार का चक्र नहीं चलता बल्कि उस से मनुष्य का ससार कडुआ तथा बेसुरा बन जाता ह । अगर ससारको मृदु, आल्हादक एव सुदर बनाना हो तो जीवन में प्रेम तथा सहिष्णुता को व्यापक बनाना चाहिए।

• •

पल~~

जो मनुष्य प्रमाद–ग्रस्त हो उसे पल, घटा, दिन, मास अथवा वष अथवा अपन जीवन की भी कीमत नहीं होनी जब कि अप्रमत्त के लिए तो एकाद पल भी सुनहरा होता ह, क्योंकि सुवर्ण प्राप्ति करानेवाला आखिर कार पल ही तो होता है न ?

• •

जीवन-सत्व —

गन्नेको पेरोगे तो मीठे रस की धारा ही बहेगी, चदन को घिसोगे तो शीतल-सौरभ युक्त महफिल की ही सृष्टि होगी। वृक्ष पर पत्थर फेंकोगे तो भी वह मधुर फल ही देगा। धूप को जलाने पर उससे सुगधित धूम्रावलय ही प्रकट होंगे। ठीक वसे ही सज्जन को छेडने पर वह करुणोत्पादक क्षमा का ही दान देगा ।

अपकार करन पर भी, सज्जन सिवाय जीवन-सत्व के और देंगे ही क्या ?

—चित्रभानु

* * *

· पाठकों के नाम ·

पुस्तक जैसे-तैसे पढ कर पूरी न कर दें, बल्कि पुस्तकांकित भाव, विचार तथा भावना का गहराई से अध्ययन, मनन, मथन करने का प्रयत्न कर हो सके तो, शांति एवं धैर्य से वस्तु को मतव्य परखने-समझने की सावधानी रखे इतना भी करें तो लेखक एव अनुवादक का कम उपकार न होगा !

* * *

चत्तारि सरण पवज्जामि
अरिहते सरण पवज्जामि
सिद्ध सरण पवज्जामि
साहू सरण पवज्जामि
केवली पन्नत्त धम्म पवज्जामि

* * *

जिसके, भव अटवि में रखडानेवाले मोहादि बीजांकुर प्राय
नष्ट हो गये हैं, ऐसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश अथवा
जिन जो हो मेरा उसे साष्टांग नमस्कार हो

— श्री हेमचन्द्राचार्य

* * *

सर्व मगल मांगल्यम
सर्व कल्याण कारणम्
प्रधान सर्व धर्माणम्
जैनम् जयति शासनम्

* * *

अपने धर्म को नुकसान न पहुँचाओ !
अन्य के प्रति धम के अन्याय न करो ।।

— सम्राट अशोक

आदर्श जैन

शाति ! शाति

सकल विश्व-शाति के इच्छुक
हे चेतनमय शाति के सलोने दूत !
प्रभात के विकसित कमल,
जीवन-प्रतिभा के पुजारियों की,
अटूट भक्ति के, हे अधिकारी पुरुष !
नवजीवन की मधुर तान आलापनेवाले
प्यारे सनातन सगीतकार !
स्वागतम् ! स्वागतम् !

* * *

क्षात्रधर्म की गौरव-गीता सुनानेवाले,
दिल दिल में दीप-ज्योति जलानेवाले
आनन्द लहरियाँ स्फुरित करनेवाले
अज्ञान-निद्रा से जगानेवाली
ओ प्रेममयी ज्योत !

* *

वीरयुग के प्रधान पुरुष—
मेरु को हिलानेवाले महावीर के सुपुत्र !
मोक्षमार्ग के महापथिक
पवित्र और मोहक प्रतापी नरशार्दूल !

* * *

भीरू और निर्बल बने हुए
नरम और ठिंगने बने हुए
निस्तेज और बकवासी
समाज, राष्ट्र एव विश्व में
नवचेतन की, नव आदर्श की गगा प्रवाहित करनेवाले
अय ! लोह–कवच सज कर निकले
अलमस्त बहादुर योद्धे !

* * *

ओ मृदुता की लुभावनी मूर्ति
मानवता के आदर्श प्रतिनिधि,
जैनसस्कृति के श्रेष्ठ–तत्वोंके समुच्चय
भाग्यशाली नरोत्तम !

* * *

जीवन के कठिन आदशा का
सेवन करनेवाले, ओ शूर उपासक !
उग्र तपश्चर्या एव यातनाओं को
सहनेवाले पुरातनकालीन योगेश्वर !

स्वगौरव की परम ज्योति,
चैतन्यमय शिराओं से ज्वलंत
स्वातन्त्र्य की साक्षात् मूर्ति
दुनिया के ओ दिलाराम।

* * *

सदा निजानन्द में मस्त ओ गुलाब!

सिंहनी का दूध पचानेवाले कनकपात्र,
फुत्कारते विषधरों को
शांत करनेवाले अय साहसी जादुगर!

* * *

'जयशक्ति' के प्रचंड झंझावात से

Wall दीवारों को धराशायी बनानेवाले पवनराज!
सौन्दर्योद्यान के चतुर माली,
विश्व-धर्मों के पवित्र मंदिर

* * *

नवप्रभात-से शांत और मनोहर

ताजे प्रस्फुटित औ' प्रसन्न,
चारित्र की मोहकता फैलानेवाले
विषय-वासना को विजय करने निकले शूर सैनिक!
संकटों को भेद कर कूच करनेवाले
अनंत-बल के स्वामि—

सिद्ध-शीला के ओ इच्छुक
प्रसन्नवदन तेजस्वी वीर

* * *

धीरज धर !

जरा शाति !
शात बन ! भाई शात बन ! जरा ठहरा जा !
तेरी यश-गाथा गाने दे !
इस प्रतापी एव प्रेरक
जीवन की तेजस्विता, सबको पान करने दे !
सृष्टि के हृदयोदधि में
नवप्राण की चचल तरगें उछलने दे !
जीवन-खडहरों में पडे
मानव को वास्तविक-जीवन की कला विकसित करने दे !
अज्ञान सागरमें डूबते जनों को
तैरती नैया में बैठने दे !
जीवन की उन्नत सोपानों पर
चढत यात्रियों के यात्राधाम को खोजने दे !
तेरी अलौकिक शातिमें
जीवनकी सारी रुकावट दूर करने दे
कलाविहीन कगालों को
जीवनकला से समृद्ध होने दे
विकसित होनेवाले प्रभात के नवरग में
रात्रि के घोर अधकार को

स्स्कृति के रुँधे हुए मार्ग को
अनतशक्ति मे साफ करने दे !
मानवता का दिव्य आर्षदर्शन
प्रत्यक्ष करने के लिये प्रयत्नशील को सतुष्ट होने दे !
अहिंसा के अमृत सगम को निखारने दे
शूरवीरों जैसे क्षात्रतेज के साथ ही
मिथ्या अध्यात्म के स्थान पर
सयम एव चैतन्य की चिनगारी झरने दे !
विश्व के क्षुद्र मोह तथा कलह के वजाय
वस, सुधा का सींचन होने दे।

* * *

धैर्य रख भाई !

धैर्य
दुनिया की तू अमर आशा है
जरा ठहर ! भाई मैं तेरा मार्ग दर्शन करूँ
स्मरण पट मे कागज पर अकित कर दूँ !
अकित करता हूँ पर
पर इस तेज तथा पवित्रता के समक्ष
लेखनी का गर्व उतर जाता है
पवित्रता के हिमालय के पास
विचारों के पुद्गल ठडे हो जाते हैं
प्रिय पुरुष ! आदर्श पुरुष ! सच्चे जैन :
तेरे पवित्र दिल में से—

हृदयके पवित्र कोने में मे
इस तुलिका को—लेखनी को भी
यशस्वी बनने का आशीर्वाद दे! भाई!

* * *

ओ! अनन्त की महायात्रा को निकले
उड्डाण भरते केसरी सवार! धीरज धर!
इस केसरी की अयाल को
जरा ढीली पकड़!
तेरी यह रम्य और मनहर
चित्राकृति मुझे चितरने दे।
चित्रकार के ज्ञान-तंतु श्रमित हो जाएँ
मध्य में से ही तूलिका लौट जाती है।
किंतु अनन्त काल की क्षुधा के पश्चात् ही तूलिका को
ऐसा एकाध खाद्य मिलता है
भला कैसे छोड दे?
वीर! तेजस्वी वीर!
तेरे स्वरूप को चितरने दे!

* * *

हे ससार सुनो
जैन का खून ही अद्भुत है।

* * *

शक्तिमैय्या का मंदिर अर्थात् वह जैन है

जयशाली–तत्वों की गुफा
वह 'जैन धर्म' है।
भूल जाओ जैन नामविशेष को।
जैन 'वस्तु' को जानो।
जीतना जिसका मन है; वह जैन।

* * *

जैन अर्थात् अजेय

प्राणी समस्त को जीतने की मनोवृत्तिवाला
जयके अन्वेषणार्थ रात–दिन कार्यरत
वही सच्चा 'जैन'
निर्जीव सृष्टि की कोई अद्भुत सजीव मूर्ति
स्वाधीनता की भावना का पुजारी–
सर्वत्र कर्मयोग का ध्वज फहरानेवाला
वही सच्चा 'जैन।'

* * *

"जैनत्व" यह आत्मा की स्थिति है

आत्मा को कसा जाए त्यों 'जैनत्व' खिलता है
जैन कोई जाति नहीं, बल्कि धर्म है।
Race जातिसूचक नहीं,
Life जीवनसूचक भावना है
जैन किसी व्यक्ति विशेष की

अथवा दल की खास पोशाक नहीं ।
वह समूहसूचक नहीं पर भावसूचक है ।
जो चाहे वह व्यक्ति 'जैन'
'जैनत्व' जिसे वरण करे वह जैन;
दिव्यता के गगनचुम्बी शिखरों पर
चढनेके लिए दौडनेवाला, जैन
और चार दीवारी में कैद होकर रहनेवाला ही अजैन !

* * *

'जैन' मात्र को जाति का बंधन नहीं,
प्रकृति ही 'जैन' को बना सकती है ।
किसी देश, पथ अथवा जाति का
कोई भी जयरत पुरुष वह 'जैन' !

* * *

[आत्म] स्वातंत्र्य का महामंत्र फूँकनेवाला
प्रत्येक मानव 'जैन,'
और परतंत्रता की श्रृंखलाओं में रमने वाला
प्रत्येक अजैन

* * *

एकांत में योग साधक
योगी तो इस धरती पर असंख्य हैं !
परंतु समुदाय के बीच खडा होकर,
'सामयिक' करनेवाला एकमेव वीर केवल 'जैन' ही है ।

* * *

क्षात्रवंश का यह नरसिंह है।
शूरवीरता की तह में मानुता टपकती है
मस्तिष्क ठंडा है और हाथमें गर्म्मी,
भयकर युद्धों के बीच भी
Cold headed शान्त-चित्त जाता पदाति है।
ना कि किसी पंथ अथवा दल का गुलाम,
'बाग-बगीचे' के पिंजरे का पछी नहीं,
यह तो वनराज है खुले वन-उपवनों का!
कारागृह की कोठरी तो
'गुलाम' के लिए ही मुबारक हो!
वनराज पर भला बंधन कैसे! कम्पाउन्ड कैसा?
शेरबच्चे को तो स्वतंत्रता ही प्रिय होती है!
और 'स्वाधीनों' को भला जंजीरें कैसी?
श्वेताम्बर, दिगम्बर तथा स्थानकवासी के लेबल कैसे?
निर्बलता की संतान—'गुलामी' में से ही
गुटबन्दी की बेडियाँ तैयार होती हैं।
उसे खण्ड खण्ड कर देना ही 'जैन' का कार्य।
उमड़ते चैतन्य को भला कौन सी दीवारें रोक सकती हैं?

* * *

जैन की जिन्दगी का मूल उद्देश्य
Will to victory है
और उद्देश्य-पूर्ति हेतु
सदा Will Power को बढ़ाता है:

निखिल विश्व की यही एक राना है—
Ruling Power—
Will Power,
प्रबल इच्छाशक्ति,
योद्धाओं का यही अमोघ शस्त्र है।
विजेता की यही वास्तविक सहचरी है
Will Power is only
The Ruling Principle
Of The said Jain
Or Victorious world फलस्वरूप,
जैन प्रतिपल will इच्छा को दृढ करता है
और विश्व, उसका Struggle field है।
सतत सग्राम-भूमि है।
रण-सग्राम में विजयी होते होते
एक के बाद एक उच्च श्रेणी प्राप्त करना
यही समरभूमि का दृष्टिकोण है

*   *   *

जिन्दगी को वर्षों से नहीं, अपितु
'जय' के सोपानों से नापता है
पहले 'स्वय' को जीतता है
और फिर विश्वपर दृष्टिपात करता है
जैन की प्रकृति में से
आनन्द, शक्ति, एव प्रेम में से
विश्व में सभी 'शास्त्र' जन्मते हैं

जग, जग और जिन्दगी
जिसके तीनों एक ही स्वरूप हैं।
योगीराज आनन्दघनजी की
प्रमत्त अमीरस–धारा
झेलनेवाली यही एक सुयोग्य भूमिका है।
सगमदेव के नाना उपसर्ग
सहने की क्षमताशालिनी यही ' भूमि ' है।

* * *

जैनियों का ' मैं ' व्यक्ति में नहीं
बल्कि समष्टिमें समा जाता है
विश्व के सभी जीव
उसके प्रिय आत्मस्वरूप हैं !
जैन पर्वत के उत्तुग शिखर–सा है
सागर सतह से ऊँचा चमता है और
लौकिक–व्यवहार से ऊपर उडता है
दुनिया कभी कभी
इससे बहुत ही भडक उठती है —
कारण
People Superstition
लौकिक–धर्मके बनिस्बत
जैन को—आदर्श जन को
Truth ' लोकोत्तर ' धर्मके प्रति असीम श्रद्धा होती है।

* * *

जैन.—

नरपुंगवों के खून से
गठित एक शरीर है।
शत्रु के शरों को शर्मानेवाला
उसका अद्भुत हृदय है
दुनिया के ऊँचे, खानदानी
गौरवपूर्ण एवं साधुतायुक्त
आध्यात्मिक, जीवनों का यह महावारिधि है।
'भीरुता' उसके 'अमर्याद' दुर्गमें निष्कासित हो गई है,
और 'संदेह' उसके पैरों तले खर्राटे भर रहा है।
'आराम' शब्द उसके जीवन-कोश में कहीं नहीं।

* * *

वही सच्चा जैन—आदर्श जैन है

जिसके मुखमंडल पर
चंद्रमा की स्निग्ध शीतलता हो।
दिवाकर-सी प्रचंड जगमगाहट हो।
और मस्तक के चारों ओर
प्रदीप्त तेजस्वी प्रभा—
Halo of Light
'जय' की सूक्ष्म-किरणों से प्रज्वलित रहे।
और मनुष्य का बुद्धिवाद पराजित हो,
इस प्रखर तेज पुंज के आगे—
नतमस्तक खड़ा रहे।

* * *

मुखमुद्रा पर छाई भद्रता,
तेज पुंज की किरणें फैलाते
ये मनहर कपोल,
कांति और बल से
उत्साही सुदृढ शरीर,
खिलता सौन्दर्य और यौवन
देखनेवाले को भी जोश प्रदान करें।

*   *   *

नयन चक्षुओं में वीरता का जल उमड पडे
एक में वैराग्य और दूसरी में युद्ध—
आत्म-युद्ध की हुँकार सुनाई दे।

*   *   *

प्रेमल और मोहक आँखें ही
जगती पर शासन चलायें,
आँखों के इशारे पर ही
अग्नि पर शांति-जल का सींचन करें,
मुख में इतना अमृत हो
कि जिसे पी-पीकर भी दुनिया अधिकाधिक प्यासी बने!
जीवन-जैसे गुलाबी गालों पर
ब्रह्मचर्य का निशान फडक उठे।
शक्ति, प्रतिभा और तेज से
दुनिया को आश्चर्यचकित कर दे।

सौजन्यता एव शुभभावना की रेखा
पलकों के झूले पर झूलती रहे,
और सुशीलता के भार से भौंहे झुक पड़ें !

* * *

मृदु मुस्कानसे वह
दुनिया को झुकाता है।
दु ख का चिन्ह तक अकित करने के लिए
कोई जगह उसके भव्य मुखमडल पर
खाली न हों।

* * *

जैन गभीर है और आनन्दित भी
गभीरता एव आनन्द के समिश्रण से ही
उसके कलेवर का गठन हुआ है।
गभीर और मुस्काते नयनों से
मोहक लाली के सोते फूट पड़ें
और रग-रग में जीवत खून की धडकन हों
मीठी वाणी से पत्थर भी पिघल जाएँ
सौम्य, शात और वीरतापूर्ण
सुवचन हृदय की गहराई तक उतर जाएँ
और स्वार्पण की ज्योति
श्वासोच्छ्‌वास से ही प्रदीप्त हो उठे।

* * *

जैन के जीवन में
अडिग धैर्य एवं चिरशांति है,
पुण्यभावना के आन्दोलन से
वह सकल चेतन को पावन बनाती है।
वात्सल्यपूर्ण नयनों से
विश्वप्रेम की धारा बह जाएँ,
और मन की पवित्रता
उस में से सौम्य प्रकृति का दर्शन कर।

* * *

जैन कम बोलता है पर शक्कर-सा मीठा,
मानो अमृत झरता है, जी भर के पान कर ले।
उसकी मृदु वाणी, पत्थर से कठोर को भी
विंध ले ऐसी मर्मभेदक बनती है।
सब से प्रीति करता है, और कराता है।
मधुर-वचनों से विश्व को भी वश में करता है।
वीर्य सग्रह यही उसका कोष।
वीर्यका सदुपयोग कहाँ करना
जैन यह जानता है
विना वीर्य के मनुष्यत्व का गठन नहीं
यह मनुष्यत्व साधक का पहला धर्म है।
सग्राम में ही चमकनेवाला-लडनेवाला जैन
वीर्य बिना भला सग्राम कैसे जीते?

* * *

प्रेम यह उसकी गहराई का सर्वोच्च आनन्द है।
उसका ज्ञान चारों ओर से दुनिया को परखता है
शक्ति, अतीत के गौरवशाली सपनों को
वर्तमान में सिद्ध करने हेतु उठती है,
और भविष्य के सुनहरे सपने का सर्जन करती है।
साम्प्रदायिक सकुचित दृष्टि के बदले
विश्व के गहरे भाग में दृष्टि मुडी हुई है
इससे भी कीमती और कल्याणकारी
कोष, जैन में अदृश्य पड़ा है।

* * *

जैन जहाँ कदम रखे
कल्याण खिल जाता है
शब्द-स्वाप होते ही शांति छा जाती है।
जलती दोपहरी में प्रात. समीर की लहरिया बिखर जाती है
और जैन का सहनाम
सभी को चिर-शांति पहुँचाता है
उस के मनमोहक हास्य के फूल
जीवन को सुरभित कर देते हैं,
उस की प्रत्येक प्रवृत्ति
जिंदगी में रस तथा कला की समृद्धि करती है।

* *

हे शीतल दुनिये !
सह सह कर थकी दुनिये

आ एक बार आ!
वर्तमान के कलहों से निपट कर आ!
किसी पवित्र पुरुष—
तेजस्वी पुरुषोत्तम की छत्रछाया में!
जैन से मुलाकात यह तेरा अहोभाग्य है।

* * *

शक्ति एव सौरभ का जोश
भला किसे आकर्षित न करे?
किसे शाति न दे सके?

* * *

देवेश इन्द्र का ऐश्वर्य भी
जैन की तपश्चर्या भग नहीं कर सकता।
रभा के प्रलोभन–मेनका का लुभावना नृत्य
जैन को नचा नहीं सकता।
वह सौन्दर्य को समझ–परख सकता है
सौन्दर्योपभोग करना भी जानता है।
सौन्दर्य–तत्व समुच्चय का वह
अधिकारी अभ्यासी जो है
जिस पवित्र भावना से बहन का सौन्दर्य देखता है,
ठीक उसी पवित्र दृष्टि से
सृष्टि के सभी तत्व–स्वरूप को निहारता है।
प्रेम करना जाने, वह जैन
पर मोह से परे

मोह अर्थात् आत्मा की अधीनता (परतत्रता)
जब कि प्रेम यानी आत्मा की अनोखी सुशबू !

*　　*　　*

जैन के जीवन के पीछे ध्येय है
प्रत्युत वह जीवनकला विकसित करता है ।
उस की सामर्थ्य के पीछे सिद्धात है,
फलस्वरूप वह सुगधित प्रतीत होता है ।
उस की भावना के पीछे आदर्श है,
अत वह भव्य लगता है
शुद्धि की वायु-लहरी
जीवन में तेज-रग भरती है !
सैद्धातिक अचलता
उस की सामर्थ्य को बढाती है
नित्यप्रति नयी स्फूर्ति का उद्भव करती है ।
आनन्द की अखड पूजा,
उसमें कार्य करने की शक्ति सचय करती है
अलकापुरी के कुबेर भडार
उसकी मानसिक समृद्धि की तुलना में तुच्छ लगते हैं ।

*　　*　　*

परिवर्तनशील विश्व का वह सच्चा समालोचक है
प्रत्येक सुन्दर दृश्य उसके
जीवन को नव-दीक्षा का पयपान कराते हैं ।
सध्या के सुनहरे रगों में विमोहित न हो,

भावुकता के प्रहार में न बहकर,
ठगिया रगों को तो वह नचाता है
Feelings भावना को नचाता है वह
'जैन' मात्र का कोई नचा नहीं सकता।
क्यों कि Thoughts & Feelings
दोनों उसके लिए पालतु कुत्ते के समान हैं
भावनाओं के जागृत होते ही वह
निश्चयपूर्वक उन्हें दबा सकता है।

* * *

जैनी—दांपत्य में विलासिता की दुर्गन्ध नहीं,
बल्कि पवित्र प्रेम की सृष्टि है।
विकार नहीं, रस की बूँदें टपकती हैं,
मोह नहीं, वात्सल्य झरता है
न ही विलासिता को सुख मानता है वह
पर अघोरियों की गाढ निद्रा
मीठी नींद में तो
अघारियों का घात ही होता है न!
'जैन' सदा—सर्वदा जागृत रहता है।

* * *

शैशवकालीन विवाह को 'जैन'
अपनी और विश्व
सभी की आत्महत्या समझता है
कारण

उससे बलशाली पुरुष का जन्म नहीं होता।
विश्व का मानव-पौधा मुरझाता है
इच्छाशक्ति का स्रोत सूख जाता है
बनिस्बत शक्ति के कोमलता की पूजा होती है
और यह पाप महापाप है!!

* * *

आदर्श जैन का विवाह
बहादुर पत्नी के साथ ही होता है
साहसी वणिक–
दूर कहीं से खोज कर
गुणवती गुणसुंदरियों का ही पाणिग्रहण करे।
'मानवता' और मानवता को ही मात्र
विकसित करनेवाली भूमिका भी टोह लेवे।
सुगठित देह-यष्टि औ'
सुदृढ मन की सन्नारियों को ही वरे!
जिसके साथ आजीवन दिव्यप्रेम से बंधा रहे,
अन्नियोचित प्रेम कर सके, और
व्यापारिक प्रेम—
बाजारू-दिखावा-व्यवहारिता के लिए छोड दे।

* * *

शक्ति, यौवन एव रस से युक्त
अखंड रस-समाधि का सेवन कर
ससार-प्रयाण का श्रीगणेश करे।

और ससार-पथ पर अग्रसर होकर
शेर-बच्चों की अनुपम भेंट, वसुधरा को अर्पित करे।
प्रतिवर्ष भेड-बकरियों की प्रसुतियों के बजाय
बारह वर्ष में एकाध सिंह को जन्म दे।

* * *

दोनों के बाह्य सौंदर्य की परत में
पुण्य-भावना की गगा बहती हो,
परस्पर के शुभ मिलन से मधुरता टपकती हो,
यौवन की तेजस्वी शक्तियाँ उछल-कूद करती हो
और उनमें शक्ति को नियत्रित करने का अद्भुत सयम हो
ऐसे आदर्श युगल (दपत्ति)
अखड तपश्चर्या के अत में
तेजस्वी सतान की प्राप्ति कर, समर्पित करते हैं
और जगती को देवाशी नर उपलब्ध होते हैं।

* * *

यौवन को, जैन एक पवित्र धर्म माने
धर्म-सी पवित्रता से यौवन को सम्हाले
चौकडी भरते यौवन को
सयम की लगाम से जोत कर दौडाए
पर यौवन को शिथिल होते निहार
सयम की झूठी मर्यादा रख, विनाश को न्योता न दे।
आपत्ति-विपत्तियों की सीमा

'जैन' के लिए न हो'
मुश्किलों पर मुस्करा दे वह जैन'
वीर्य के दग्ध स्तभों के समक्ष
सकट भला किस बिसात में?
सकट अर्थात्
सग्रहीत वीर्य का सदुपयोग करने हेतु
प्रकृति-देवी ने भेजा प्रिय भाजन,
प्रत्युत सकट का वह स्नेहपूर्वक सत्कार करता है,
वीर्य को बल आजमाने का आदेश मिलता है
और शरीर में चेतन जागृत रहता है।
विजय मिलने पर
अभिमान की खुमारी न लाने,
पराजय अथवा शोक से
हताश हो निराशा से डरे नहीं,
जैन तो गिर कर खड़ा रहे,
मानो आत्मयुद्ध की
भूमिका नित्यप्रति बनाता रहे —
गिरना, बार बार उठना और दौड़ना
यह जैन का सनातन ध्येय है।
तभी तो हर्ष और शोक :
हथेली में खेलाने के दो सुदर जीवन खिलौने हैं।

* * *

' जैन ' को कभी स्थूल–सत्ता की परवाह नहीं
उसके व्यक्तित्व की प्रतिमा ही
अगोचर रूप में सर्वत्र सत्ता जमा लेती है ।
सत्ता में होशियारी बताती है
धन का आदर्श समझता है
प्रकृति की गुत्थियाँ हँसते–खेलते सुलझाता है
पाप का स्वीकार
यह भोले–भाले हृदय का दर्पण है
क्षमा का गुँजारव
यह ' वीर ' मात्र का महामन्त्र है
उसके मन की समृद्धि महान् है ।
चित्त की शांति अटल अचल है ।
आत्मा की वाणी
श्रवण करने की अद्भुत शक्ति है
लोग Masses की मानस–तस्वीर [दृश्य]
एक नहीं होती, रहती नहीं,
यह तो चलचित्र की भाँति चचल है ।
लोगों के– व्यवहार के– निंदक अभिप्रायों पर
जीवन जीनेवाले
जीवन ' जीते ' नहीं
बल्कि जीवन की फिरकी को किसी तरह खींचते रहते हैं ।
आत्मा की आवाज यही जीवन
' जैन ' इसे भली भाँति जानता है ।

* * *

ज्ञान चक्षुओं द्वारा
दुनिया को ज्ञान पथ की ओर ले जाता है
आत्मा की प्रसन्नता में से
अमृत रस बहाकर पान कराता है
जीवमात्र के साथ समन्वय साध
विश्व को एकता की सजीवनी पिलाता है।
उत्साह से सदा दौड़ता रह,
जगती को दौड़ाता है
चेतनानंद का जल पीकर
सभी को गति प्रदान करता है
भयभीत करने के बजाय भयभीत न होने में ही
उसकी बहादुरी का मूल्यांकन होता है।
तपश्चर्या से निर्मल बन वह
निर्मलता का पाठ पढ़ाता है।

* * *

ब्रह्मचर्य की रश्मियाँ पान कर
ब्रह्म का स्वरूप बताता है
व्रत को वह किसी प्रकार का बंधन न मान,
स्वतंत्रता का मुख्य द्वार समझता है।
उसे नीरस, शुष्क तपश्चर्या न मान,
उसकी खूबियों का नित्यप्रति दर्शन करता है।
स्वयं बलि होकर
दया का ध्वज फहराता है।

प्रेमी से अलख का मंत्र लेकर
त्याग का धर्म समझाता है
कठोर परिश्रम से प्राप्त श्री को बाँट कर
दान-धर्म का माहात्मय उद्घोषित करता है ।
शत्रु से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार कर
स्वयं की दिव्य भावना की
विशालता का परिचय देता है ।
विचार-चक्र में फँस कर भीरू नहीं, बल्कि
कार्य संपन्न कर मुक्ति प्राप्त करता है ।
सिद्धांत के लिए अपना खून बहा कर
नवसृष्टि का सर्जन करता है।

* * *

उस के निर्मल मन की मृदु मुस्कान के सामने
उलझी पहेलियाँ खुद-ब-खुद सुलझती हैं ।
मौन शब्दावलि में से सर्वत्र
प्रेरणा एवं पवित्रता के फव्वारे छोडता है ।
वीरत्वहीन तथा प्रभविहीन
प्रत्येक वस्तु में यह मृत है ।
परमात्मा तथा प्रभुताविहीन
हर एक चीज में से निष्कासित है ।
जीवन में प्रतिपल
चारों ओर में संस्कार-स्रोत बहाता है ।
संस्कारी बन कर अधिकाधिक सहिष्णु बनता है ।

वाद्यावरणों को चीर फेंक
धर्म-प्रभुता के गर्भ में लौटता है ।
जैनी के ज्ञान ही संस्कृति विकसित हो
प्रेम के साथ निर्मलता बहती आए;
दया के साथ दृष्टि का विवेक विकसे,
संयम के साथ रसिकता का स्रोत फूटे ।

* * *

जगती के मलबे के ढेर के बीच
जैन अपनी हरी भरी बगिया लगाता है
चारों ओर की दुर्गंधित वातावरण के बीच
जिंदगी का झरना बहाता है ।
जैन मात्र हृदयपूर्वक माने कि
" स्वर्ग का सृष्टा मैं ही हूँ,
विश्व की कोई सत्ता
अथवा परलोक के कोई देवी-देवता
मुझे मोक्ष नहीं दिला सकते
मुझे उबार नहीं सकते
बस मेरी तारणहार केवल मेरी आत्मा ही है,
तारणहार की सर्वोच्च शक्ति स्वयं की आत्मा में है
आत्मा सो परमात्मा ।
परमात्मा अर्थात् दिव्यता
और दिव्यता यानी मैं स्वयं । "

ऐसी सर्वोत्कृष्ट मनोकामना जिसकी है
वही है आदर्श जैन !

* * *

जैन में—

नौजवान की रसिकता तथा बल हो,
वयोवृद्धों की बुद्धिमानी और विराग
दीर्घदृष्टि और अनुभव हो,
साथ ही शिशु की खिलखिलाहट तथा उत्साह
उमड पडता हो,
शरीर संपत्ति को अतुलित बनाने की तडप जागे,
आत्मा कमने के मनोरथ फूलें,
और मूर्तिमंत चैतन्य तथा शांति के
जहाँ से प्रत्यक्ष दर्शन हो।
समय परिवर्तन के साथ जो दृष्टिबिंदु फिरा सके,
और अन्याय अत्याचार के सामने
विद्रोह करनेमें ही 'जीवन' समझे।

* * *

समृद्धि से 'जैन' खरीदा नहीं जा सकता,
धमकियों से डराया नहीं जा सकता,
लोभ से ललचाया नहीं जा सकता,
ठकुर सुहाती से भी जीता नहीं जा सकता,
सिद्धांत के आगे वह समृद्धि को भी ठोकर मारता है
वीर्य के आगे धमकी हास्यास्पद सिद्ध होती है

लकडभारती के आगे लोम-ललना थरथराती है
मान-पान के भूखों का ही, ठकुर-सुहाती से हनन कर सकते
पर 'जैन' इन सब से परे है
खुशामदी टट्टू भली भाँति सुन ले—
"भाई! ऐसा निस्तेज शस्त्र!
क्षत्रिय विरले को पराजित करने में क्या समर्थ है?
क्षत्रिय के सामने तो तीक्ष्ण शस्त्रास्त्र का प्रयोग कर!
खुशामद के बदले, तू निंदा कर
यह मुझे ज्यादा पसद है।"

*   *   *

जैन, पत्थर की देह का पूजक नहीं,

पर पत्थर में रहे—
मूर्ति के 'मर्म' को पूजता है
सस्नेह और श्रद्धासे
उस मूर्तिको—
मूर्ति के स्थूल देह को,
कल्पित आकृति को
दृष्टि समक्ष रख
'वस्तु' के मर्म को पूजता है
और मूर्ति की दिव्यता का—
उसकी मूर्तिमत प्रभुता का
प्रतिबिंब स्वय में उतारता है।
प्रभुका–दिव्यता का–प्रभुता का

उसका प्रतिबिंब स्वय में उतारना।

यही सच्ची पूजा

इस पूजा का सच्चा पूजक यही आदर्श जैन !

* * *

शान्तिनैय्या के सुकान के पीछे

जैन के रोम-रोम में साहस है

उसके नस-नस में शौर्य भरा पड़ा है

शील उसके अणु-अणु में

तथा सेवा उसकी प्रबल भावना है ।

ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय

वैश्य या शूद्र नाम अलग-अलग हैं

पर सबका समान स्थान है

न कोई उच्च है न कोई नीच

न कोई बड़ा न कोई छोटा

जिंदगी का एकमात्र लक्ष्य मोक्ष

और मोक्ष का समानाधिकार सभी को है ।

प्रभुदर्शित 'जैनात्मा' हमेशा यही कहती है ।

* * *

असफलतावस्था में जैन उदास नहीं बनता,

अथवा सफलता-प्राप्ति पर झूम नहीं उठता ।

आशा की पतवार कभी छोड़ता नहीं

और निराशा में नैय्या नहीं डुबाता

भौतिक सुख की लालसा में सतुष्ट नहीं होता,

न ही दु ख के आविर्भाव से दु खी !

* * *

विषम से विषम परिस्थिति में भी वह
आत्मा का प्रामाणिक यत्न जारी रखता है ।
वह कहता है—
" मै Warrior योद्धा हूँ ।
विजय-प्रस्थान पर निकला अचल सैनिक हूँ ।
कर्म यही जीवन-कृत्य है ।
और विजय-प्राप्ति मेरा प्रिय सिद्धात । "
योद्धा को आत्मयुद्ध चाहिये ही,
वर्ना शक्ति-स्रोत क्षीण होता है,
सग्राम मे शक्ति है !

* * *

दृढता और शाति
उसके युद्ध के दो सिर हैं
विनय तथा शौर्य
उसके दो बलिष्ठ बाहु हैं ।
बुद्धिवाद-चेरी से
नित्यप्रति आत्मवाद-शक्तिवाद की
सेवा-सुश्रुषा कराता है ।
बनियाशाही लोक समुदायमें,
प्राय उत्साह भरता है
और युद्ध द्वारा मानव को

वीरत्वपूर्ण जीवन जीवित रहना सिखाता है;
अहिंसा और युद्ध का
वास्तविक मूल्यांकन कर
विश्व के सामने सच्चा दृष्टिबिंदु प्रस्तुत करता है
सिंह के पिंजरे में घुस कर सिंह को मारता है,
काजल की कोठरी में जाकर
सहास्य, प्रसन्न वदन वापस फिरता है

*　　*　　*

सामयिक, दर्शन और पूजन
शिथिल होने के लिए नहीं
बल्कि !
सामयिक की 'क्रिया' से
समता की अद्भुत शक्ति प्राप्त करनी है।
क्रोध पर नियंत्रण रखने की कला से अवगत होना है
स्व पर के कल्याण की खोज करनी है
विघ्न-विपत्तियों को वश करना है।
क्रमशः आत्मविकास करना है।
मानसिक एवं वाचिक दोषों का हनन करना है
शून्यता में से चैतन्यत्वमें प्रविष्ट होना है।
भ्रातृत्व की भावना का बीजारोपण कर
सात्विकता की मनोहर दुनिया में बसना है
तृष्णा की तिजोरियों को तोडना है

और इष्टदेव के आदर्शों को स्वजीवन में उतारना है।
स्वातन्त्र्य, शोभा तथा सामर्थ्य
Freedom (Liberty of Soul)
Grace and Spiritual Power
उसमें से स्फुरित होनेवाले हैं।
स्वायतता—आत्म स्वायतता का
महान् आनन्द जा लूटना है
भले ही शैल शिखर सिर पर टूट पडता हो, पर
एकाग्रता से जरा भी चल–विचल न होना सीखना है।
आत्मा को दुखि बनाने पर भी
अरियों के समक्ष क्षमा–गुण दर्शाना है
गुप्त रही आत्मशक्ति को
आत्मबल–Source Force मे ही
विकसित कर, मोक्ष के दर्शन करनी है।
आत्म संशोधन का समय साधना है, और
समझना है स्वावलम्बन की सिद्धियाँ।

* * *

दर्शन और पूजन से पल–प्रतिपल

दिव्यता एव भव्यता का पान करना है
पवित्र लहरियों में विचरना है।
शांति के महासाम्राज्य में प्रवेश करना है।
श्रद्धामय जीवन को यथार्थ–व्यवहार में उतारना है।
तत्त्वज्ञान की एक झलक भर पहचान करना है।

दुनिया के क्षुद्र मोह-माया के जंजाल से,
चित्त को पराङ्मुख कर, अंतराभिमुख बनना है।
तप और अभिग्रह
नियम और प्रतिज्ञा (बाधा)
'कठोरता' सीखने के लिए है'
'सुदृढ़' बनने के लिए है।
न कि सुखलोलुप बनने के लिए।
सच्चा जैन यह ठीक समझता है।

* * *

सबल का अनुमोदन और
निर्बल के हाथ में हाथ डाल कर
उड़ान भरना सिखाने में ही
'जैन' मात्र पुण्य समझता है।
दया कर सहायता करने में—
और सदा याचक स्थिति में दीन बना रखने में
वह पाप, महापाप समझता है :
निर्बलता को बढ़ानेवाले
सिद्धांत खुद-ब-खुद पाप है
जैन की यह दृढ़ मान्यता है।
जैन के जीवन कौशल्य का गणित
विवेकमय दया—
और दयायुक्त शूरता में निहित है।

* * *

जैन एकातका आनदार लाल (मानिक) है, और
सामुदायिक स्वभावका
वह चतुर पथप्रदर्शक है
सभी को सत्कारता है धिक्कारता है मात्र—
Meanness of Soul तुच्छता को–क्षुद्रता को !

* * *

सामान्य जन–समुदायकी
भावना तथा बुद्धि को
इच्छित मार्ग पर मोड सके,
कल्पित आकार में ढाल सके
ऐसा यह समर्थ पुरुष है
उस के एक जीवन में
असख्य जीवों का इतिहास भरा पडा है,
ब्रह्मत्व एव क्षत्रियत्व का वहाँ सुयोग जडा है।
ज्ञानयोग तथा कर्मयोग का सुदर सयोग है।
रसिकता और विरागता का सुमिलन है।
जडता और निर्बलता
उसकी कल्पना में भी नहीं
सकुचित दृष्टि एव सदेहवृत्ति
उस के सपने में भी नहीं
उल्हास और दु.ख में भी
वह समान रूप से सयम दिखाता है
.। मर्यादा अथवा

दाभिक नैतिक (!) सिद्धांतों को
अवसर मिलते ही जडमूल से उखाड फेंकना है।
जगतीके Mysticism गूढविद्या के
कोषागार की तालियाँ उस के हाथ में हैं।
शुभ हेतु के लिए चुपके से जाकर
[शुभ हेतु का जरा भी प्रदर्शन किये बिना]
कई बार वह दुनिया को उभारता है,
दुनिया-लुढकती दुनिया को देख-देख कर
भडकता है और स्तंभित बनता है
सजग होता है और दौडता है।

* * *

पापसे डरता है, पर
जैन, पाखंड के बजाय पाप को अच्छा समझता है।
रूढि के बजाय आवश्यकता को ज्यादा महत्व देता है।

* * *

जैनके त्याग में रस है मौरम भी
और आत्मकल्याण विश्वकल्याण की सुखद कामना।
जैन की शक्ति सहार के लिए नहीं, बल्कि
निर्बल को आराम पहुँचाने
शुभ प्रवृत्ति का श्रीगणेश करने
और अशुभ के नाश के लिए है।
नाक रगड कर जीने के बजाय
मृत्यु ...

पवित्रता एव स्वतत्रता की रक्षा हाती हो तो
वह सहर्ष मृत्यु को भी निमत्रण देता है।
जीता है जैन
आत्मा के पूरे वैभव से—
और मरता भी है जैन —
आत्मा के पूरे वैभव से।

* * *

परिस्थिति का विवेक करना वह जाने
विविध स्थिति का सच्चा भान रखे,
मुश्किलों में से 'जय' का मार्ग खोजे, और
तूफान और आँधी में अकेला लडे।

* * *

प्रत्येक चीज, भावना अथवा प्रसग में
जैन निर्लेप बन मजा लूटता है।
गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ ढगाढाई कर
नई इमारतें बनाता है
पुराने चौकठे को तोड
नव दृष्टि और नये प्रवाह से
प्राणवान–सचेतन आत्मा की सृष्टि करता है।

* * *

आँसू अथवा निराशा के सदश
उस के प्रगतिमय जीवन में नहीं।

तटस्थ दृष्टि तथा निर्मल भावना
सादगीमय सगीनता एव दृढ कर्तव्यप्रियता
सदा-सर्वदा उसे ऊर्ध्वगामी बनाती है,
प्राकृतिक जीवन की ताजगी
उसमें नवप्राण, प्रेरणा एव प्रतिभा की पूर्ति करती है
उसका हार्दिक 'लावा' अनेक पाखडों को भस्मीभूत,
और मानसिक 'शीतलता' ज्वालामुखियों को भी शात करती है।

* * *

असामान्य जीवनलीला
यही 'जैन' का इतिहास है
निडरता सत्य और उसकी शुद्ध उद्घोषणा
विश्वजीवन के सलील को निर्मल करें,
यही उसकी अनत लीला है।
निर्भीत एव निखालिस सेवा
यही उसकी मानवता का मीठा फल है।
"जैन-धर्म के द्वार
विश्व के लिए खुले हैं
कोई आओ! कोई भी आए!"
यह उसका महान् आव्हान (घोषणा) है।

* * *

जैन की 'कठोरता' बहुधा 'भीरु' को खटकती है
कारण

अनिष्ट कर्म–कार्य की अच्छी तरह से
खबर लेने ' जैन ' सदा सजग होता है।

* * *

जैन का स्वतंत्र मानस एवं शक्ति
अद्भुत संस्कृति रचें और विकसित करें,
प्रति प्रयोग में से अनोखी प्रेरणा प्राप्त कर
स्व-जीवन को विकसने दें।
भावी जीवन की दिशा निश्चित् करें,
चाहे जैसी शक्तियों के साथ होड करें,
लोकदृष्टि के शीशे साफ कर
सामाजिक गंदगी को ठिकाने लगायें
और राष्ट्र–जीवन के वातावरणमें
विशुद्धता एवं चैतन्य की पूर्ति करें।

* * *

दुनिया के प्रवाह में बहने के बजाय
जैन स्वयं दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करता है
जगती पर स्वयं के शुद्ध चरित्र के
' हिप्नोटीजम ' की कसौटी करता है
प्रिय संस्कारों के पालन की धुन में
सामाजिक नियमों में नई पद्धति का अवलम्बन करता है।
स्वयं को ' प्रामाणिक ' बनाकर
लोक कीर्ति के शैतान को—
अच्छी तरह पैरों तले रौंदता है।

दुनिया का 'प्रमाणपत्र' उसके मन
कागज के टुकडे से महगा नहीं।
सत्य एव उच्च सस्कारों के लिए
सर्वस्व का त्याग करते हुए भी उसे दु ख नहीं होता।
मृत्यु से भी महान् प्रसगों को
वह सदेह पचाना सीखता है,
और स्वय की मृत्यु के पश्चात् भी
'जैन' इतिहास को उज्ज्वल बनाता है।

* * *

जैन के विचारों में
स्वस्थ योद्धे की स्फूर्ति है।
गहन विवेक
भव्य एव सर्वग्राही बुद्धि
और सर्व देशीय स्वभाव
निखिल विश्व में उसे अजरामर बनाते हैं।

* * *

विष के उतार में जैन शकर-पान कराता है।
बुरी भावनावालों को भी वह 'भला' बनाता है।

* * *

बधुत्व की कोरी बातें नहीं
बल्कि बधुत्व भावना आचरण में लाता है।

मोक्ष के ' पटल ' नहीं
अपितु मोक्ष की सिद्धि साधता है ।

* * *

असाधारण विषयों का अध्ययन,
यह जैन का सतत चिंतन !
असामान्य कार्यों का भार
यह उसका ' अखड ध्यान ' !
उसकी विराट मानसिक-शक्ति में से
धर्म प्रवाह बहा करे,
और दुनिया पर
नीतिमत्ता की छाप लगाता रहे
सकट उसकी मार्ग दिशा को मोड न दे सके ।
और द्विधा जीवन जीने का मोह उस में न जगाये ।

* * *

' क्या होगा ' यह नहीं, बल्कि
' क्या करना है ' उसका प्रियसूत्र है ।
किसी निश्चय से उसे
स्वय ब्रह्मा भी विचलित नहीं कर सकते
विजय उसकी भुजाओं में से झरती है
शत्रु के रुधिर में से नहीं ।
कल्याण की भावना से प्रेरित हो
आक्रमण करते भी वह पीछे पैर न रखेगा

ठीक वैसे ही शक्ति के शस्त्र-बल से
अशक्त-दीन-असहायों को त्रास न देगा।
सबलों से लड़ना छोड़
स्वगौरव को आघात न पहुँचाएगा।
मानव-वृंद में
स्व-व्यक्तित्व को निस्तेज-मद न बनायेगा,

*　　*　　*

सारी दुनिया 'ना' कहे
पर जैन हाँ कहते जरा भी न हिचकिचाएँ
उसकी आत्मा का पावन-संदेश
समाज के रूढ़ बन्धनों को नहीं माने
आंतरिक दया के बिना
दया में धर्म नहीं समझें
अपने पर 'शस्त्रक्रिया' कर
स्व को सुधारनेवाली-विशुद्ध बनानेवाली
क्रूरता बिना-क्रूरता में मानें नहीं
'अहम्' की तुच्छता में नित खोये हुए की
दया खाता है, उस पर गुस्सा नहीं होता
'मैं पामर'-के अध्यात्म को
वह वास्तविक अध्यात्म नहीं माने।
क्योंकि, जैन भली भाँति समझता है
जीवन के तिरस्कारक
स्वयमेव दुर्गन्धयुक्त गन्दे नाले हैं।

पामरता के गीत ही मानव को पामर बनाते हैं
और दिव्यता का स्फुरण नर से नारायण।
मनुष्य मात्र महान है
महान् होने के लिये ही जन्मा है
' महान् ' होने का खानदानी दावा करते हुए
जैन ज़रा भी नहीं शरमाएँ।

* * *

जैन गृहस्थ होने पर भी
अगृहस्थ-सा रह सकता है
अगृहस्थ होकर भी
गृहस्थ के सुंदर तत्वों को समझता है।
मृगजल की अपेक्षा
जैन को तृषा अधिक प्रिय है
तृष्णा के अगूढ तल पर
तृप्ति का अमृत बरसाता है।
दिन-रात कागज को उधेड़नेवाले पंडित वर्ग को
कागज पर अंकित लेख जीवन में उतारना सिखाता है
विद्या के बोझ मे कुचलने के बजाय
ऊँची उड़ान भरने के रहस्य सुलझाता है
चर्चा और पांडित्य दर्शन के बदले
जीवन में ज्ञान को कूट कूट कर
भरने में ' पुरुषार्थ ' समझ, समझाता है।
पुस्तकीय ज्ञान लेने के बदले

मानवी–चेहरे में से सुगंधी उठाता है :
अगर ज्ञान की फलकर जीवन को तेज प्रदान न करें,
तो उस ज्ञान को वह 'ज्ञानाभास' मानता है ।
हिमालय की शीतलता, और
सूर्य की उष्णता–दोनों को नित दिल में रख घूमता है ।
क्रोधाग्नि के स्फुलिंगों को
हास्य के फव्वारों में भी बदलना जानता है ।
यह कला किसी विरले को ही वरती है ।

* * *

आत्मा बेचनेवाला, स्वयं प्रभु को भी बेचता है,
स्व–अंतर का द्रोहक
प्रकृति–दत्त श्राप का ही अधिकारी है
जैन–यह अच्छी तरह से जानता है
दुनिया में परिवर्तन करने की शक्ति
अपनी मानव सृष्टि में निरखता है ।
स्वयं का भविष्य
स्व के 'खेल' (व्यवहार) से ही बनता–देखता है ।
नयी–नयी युक्तियाँ एवं नयी नयी सीढ़ियाँ
अपने विकासार्थ ही नित्य वह ढूँढ़ता है
किसी अन्य के लकीर का अंधा
बन कर वह फकीर बनना नहीं चाहता .

* * *

समय को देख, जैन मौन साधे,
मौन की मस्तीमें से आदि का प्रकाश निहारे,
और हृदय की उमडती प्रसन्नता
उसे प्रवृतिमय बनाती है।
उसकी प्रवृति का लक्ष्य एक ही–
Will to conquer की साधना कर
प्रवृत्तियों मे निवृति ले कर
पराजय की घिरी घटाओं में से
'जय' के सूर्य को खोज करना है
'सम्यक्त्व' की हृदय में स्थापना कर
अनेकांत-दृष्टि से–विशाल ज्ञान से
वस्तुओं के गुण-दोष निरुखना है
ज्ञान को सभी दिशाओं से
विस्तृतता एव विशालता स
देखना-परखना, यही जैन का जीवन-कार्य है

* * *

महाकालाधिपति की चाल पर जैन विद्युत-वेग से आगे ब
स्व आदर्श के लिये आकाश- पाताल एक करता है।
कभी तो भलमलों की मस्ती उतारती
गजेन्द्र-चाल से भी आगे बढ़ता है —
मानों विश्व सभी के कलह और प्रपच
भले ही उसके पीछे भूकते-भटकते रहें!
वह अद्भुत-निश्चल शांति से आगे बढ़ता है, पर

गत को उसकी चाल में अग्निके झोंकों का मान होता है
नरान की कम्पायमान दहाडमे
नियार ज्यों थरथराते हैं,
यों उसके अप्रगट विज्ञान के समक्ष
ब्दज्ञानी (!) काँपते हैं :

*　　　*　　　*

अनत ज्ञान, दर्शन और चारित्र का
वह अपने को अधिकारी मानता है,
ज्ञान के गहरे जल में समाधिस्थ हो
दर्शन चारित्र को साकार रूप देता है
धर्म का बाह्य दिखावा
करने की धूर्तता करने के बजाय
'नास्तिक' कहाना गौरवयुक्त मानता है
परायों के छिद्र खोजना भूला
अपने छिद्र को खोजता है।
'जयणा' के रजोहरण मे
नित्यप्रति जीवन दोषों को निष्कासित करता है।
चारित्र-गुण से स्फटिक बन
आजीवन यहाँ, प्रत्यक्ष स्वर्ग को [illegible] है।

*　　　*　　　*

किसी प्रकार के अहम्-तत्व
उसके उज्ज्वल प्रताप को [illegible] है।

सत्य से अगर भव्यता मिलाती हो
तो जिन्दगी का कोई मोह नहीं ।

* * *

जैन का जीवन, प्रदीर्घ चलनेवाला एक महायुद्ध जैसा है ।
सग्राम के भडकते शोलों को,
शीतल बनानेवाला हिम–स्रोत भी है ।

* * *

शौर्यभाव में
शाति के जूठे चोले पहनेवाले !
सुनते हो ?

* * *

जैन कभी निस्तेज शाति में विश्वास नहीं करता
स्मशानवत् शाति उसे प्रिय नहीं ।
वह चैतन्यमय शाति का सनातन–प्रेमी है ।
जैन तो शक्ति का भडार है .
शक्ति मैय्या के मदिर का
वह अनत कालीन महान् पुजारी है
शक्ति वह पूजक, नित्यप्रति शक्ति का की खोज करता है
खोज कर, उसपर सयम का नियत्रण रख
वीरोचित अखड शाति धारण कर लेता है :
वीरों की ' कदर ' करना जानता है, और

त्यारे की 'कमजोरी' भी परख लेता है।
ानगी–मनोदशा, विश्व के दु ख–दर्द औ
ुनिया की पचरंगी जख्म के पास
खने–परखने के लिये जैन के पास जीवत हृदय है :
और इन जख्मों को भरने के लिये
वह उग्र तपश्चर्या भी करता है :

* * *

जैन की दरिद्रता में भी सतोष की झलक है,
और उसकी अमीरी में दीन–दुखियों का हिस्सा।
वह राजा है, पर 'मन' का
सत्ता की गध से अलिप्त,
सेवक है सब का—
पर दासपत्र लिख कर न देनेवाला!
सुख-दु ख में वह समदृष्टि है।
पाप पुण्य में भेदभाव है।
उसके आनन्द में विलासिता का अश नहीं,
ना ही 'अहम्' का गुजारव।
जैन में निर्मलता का नीर सदा छलकता है,
और गुलाबी-सौन्दर्ययुक्त जीवन-बगिया विहसती है

* * *

जैन की 'अहिंसा'—
खौलते खूनवाले वीर का

मस्ताना जीवनसूत्र है
तूफानों के बीच सात्विकता के
शिखर पर चढ विहरते
शक्ति के ' जोम ' मे नाचत-कूदते
और ' जोम ' को समझनेवाले
किसी महात्मा का महद् धर्म है

*   *   *

सात्विकता की स्निग्ध चादनी में
जैन नित्यप्रति स्नात है।
' पराची पचाईत ' का मलवा दूर कर
दिनरात कार्यसिद्धी के पीछे पडा रहता है।

*   *   *

मीना बाजार की चीजें
जैन मुफ्त में भी नहीं खरीदता,
सदा आत्मसम्मान में मस्त रह
मिथ्याभिमान को भस्मीभूत करता है
आदि और अतिम सदी का यह मनुष्य है
आदि और अतिम घडी का विचार करना जानता है।
प्राप्त सत्ता और सपत्ति जैन पचा सकता है।
समुदाय में स्पष्ट व्यक्तित्व का
वह वास्तविक ' मनुष्य ' है।

*   *   *

जैन की भावना में संगीत की लज्जत है।

शब्दों में जीवन का सत्य झलकता है।
चित्रकार और तूलिका की मित्रता,
शिल्पकार और पत्थर की दोस्ती,
ऐसी ही सधी जैन और 'दिव्यता' में हो '
'दिव्यता' की तूलिका से जीवन को उज्ज्वल बनाएँ,
और रंगते-रंगते उसे
यह दिव्यता में अंतर्भूत कर दें।

*　　*　　*

उसकी घोषणा-शब्दों से ही

ठौर-ठौर पर वीरनर एवं वीरांगनाएँ पैदा होवें
निर्माल्यता में से शक्ति के
महान् भास्कर तैयार होवें।

*　　*　　*

उपदेश के बजाय आचरण द्वारा ही

सबके सामने दृष्टांत रखे
स्वभोग के प्रयोग द्वारा ही
जगती को त्याग का महामंत्र प्रदान करे।

*　　*　　*

जैन प्रत्येक वस्तु को नया स्वरूप देवे

प्रत्येक भावना को नवचेतन अर्पित करे।
कुदरत के साथ य^ —

प्रकृति को 'अपनी' बनाएँ।
चैतन्य को साथी बनाने, और
प्रकृति को इंगित पर नचाने सो जैन

*　　*　　*

जीवन की मृदुता और प्राण का
जैन मात्र में अद्भुत संयोग है।
उसकी चतुराई और छटा में
आत्मा की महान् पहचान है।
दया से द्रवित हो वह जैन,
आत्मरिपु को हननेवाला वह जैन,
एक हाथ में कोमलता, और
दूसरे में वीर की शौर्यता
दोनों प्रकार की भावनाओं का वह पोषक है

*　　*　　*

जैन के प्रेम पर बंधन नहीं
काल या किसी देश-राष्ट्र के,
विश्व-मैत्री से भी परे
अन्य जगत से खेलता है-प्रेम-सम्बंध बांधता है।
निंदक की वाणी से 'जैन' निस्तेज नहीं बनता
और प्रशंसक की प्रशस्ति से फूलता नहीं।
निंदा और प्रशंसा दोनों के मूल परखता है।
मूल से तने की परीक्षा कर, आदि का विचार करता है
जैन का वीर्य नयी फिल्सुफी रचता है

निनाशक रूढियों को उखाड फेंक
समाज में क्रांति भी लाता है।

*   *   *

जैन कोई यत्र नही, मनुष्य है
चैतन्यमय, जागृत पुरुष,
धडकते प्राण एव सयम दोनों साथमें
धडकते प्राण को सम्हालता है, और
'आवश्यकता' की गुलामी को,
सयम-पथ पर फेंक देता है
स्व-जीवनार्थ वह अत्याधिक
अल्प-परिग्रह रखता है।
अपने प्रत्येक कर्तव्य के पीछे रहे
निर्मल आशय एव साधन् को जाँचता है;
जैन ने जगती को कौन सी 'सुदर' चीज दी?
यह उसका सनातन गणित है।
'सुदरता' के अकों में वृद्धि करना
यह जैन का अनत सगीत है।

*   *   *

जैसी जीवन में गर्विष्ठ
वैसी ही मानवता मृत्यु में भी-!
मृत्यु का डर में ही
मानवता के कुमार देखना हैं
अहिंसा की आड में जैन भीरुता का पोषण न करें,
ना ही [illegible] पर कायरता बतावें-

सतोप के नाम कर्तव्य शिथिलता का भजन न करें
और न ही 'विरागी' की आड में आनन्द को निर्वासन दे

* * *

जैन की मधुर प्रेरणा की गगा

असख्य-जीवनो को कल्पद्रुप बनाये
ससार के प्रपचों को छोड
आत्म सगीत बजाने की धुन जगाये,
विश्व में सच्चे धर्म के प्रचारार्थ
ठौर ठौर पर 'जैन सस्कृति' के थाने बैठाये
जैन शब्द से उत्तेजित न होने वा विनति कर
'जैन' भावना का विशाल अर्थ समझाये ।

* * *

जैन की दुनिया का कोई सिरा नहीं

उसके मार्ग का अत नहीं
उसकी भावना का कोई किनारा नहीं
शक्ति का तल नहीं,
सभी का अत है एक में
केवल 'जय' की प्राप्ति में

* * *

जैन की दृष्टि से

'ज्ञानयोग' यही मुक्ति का दीपक है ।
'भक्तियोग' के शिखर से सिमट कर
ज्ञानयोग की तलहटी सोई है ।

न. 'भक्तियोग' की सभी खुभियों को पार कर
ज्ञान के प्रथम सोपान पर चढ़ता है
ज्ञानयोग की सभी सोपान चढ़ जाने पर ही
सद्-शीला के लिये छटपटाता है--साधने हेतु प्रयत्नशील है।

* * *

मानुषी नीति का मापदण्ड
जैन के मन अपूर्ण है।
दूसर के Standard पर
स्वानन्द को खोये नहीं।

* * *

ऊपर से गरुड-सी पैनी दृष्टि फेंक
जैन दुनिया को परखता है।
सुज्ञानविहीन दुनिया को चारों ओर लुढ़कती देख
अट्टहास्य करता है।
विचारों में आशावाद को प्रेरित कर
अहर्निश हृदय बल सुदृढ़ करता है।
आत्मा और देह की स्वस्थता के लिए
खूब चिंतित रहता है।
क्यों कि, जैन मानता है कि—
निर्जीव शरीर और आत्मा--
वज्र-से आदर्शों को पचा ही नहीं सकते।
लड़ाकू शक्ति और स्वरक्षा की ताकत बिना
Spiritual Strength आत्मबल
आ ही नहीं सकता--टिक ही नहीं सकता (अतः)

शरीर को सुगठित करना यह भी एक आत्म धर्म है।
आत्मा के वासस्थान पवित्र मंदिर जैसे
शरीर को बनाये रखनेवाला ही सच्चा आत्मार्थी है।

* * *

दुनिया के ठगियल आकर्षण
जैन को क्षणार्ध के लिए भी प्रभावित नहीं करते।
कारण वे जानते हैं कि
बहुतेरे 'नखर' तो वेश्या के ही होते हैं।
राजप्रासाद की 'रानी' के तो
बदन के साथ ही सुंदरता जुड़ी होती है।

* * *

'व्यवहार' को जैन वहाँ तक ही मानता है
जहाँ तक वह आत्मा का अवरोधक न हो '
वह सभी धर्मों को सम-दृष्टि से देखता है।
अच्छे-बुरे का मापदण्ड निकाल
अधिक 'इष्ट' की पूजा करता है

* * *

लिखने के लिए जैन नहीं लिखता,
बोलने के लिए नहीं बोलता,
जीवन-खेल खेलते खेलते ही बीचमें लिख जाए
स्वभाविक तौर पर बोल जाए
खेल की वाचा यह अनुभव का ज्ञान है, सत्य है।

और अर्थविहीन बातों में ही, स्वयं को
कृत्रिम कल्पना करता रहता है।
'परिस्थितिवश' का एक ओर
वह 'अव्यवस्था' का स्वागत करता है।
विद्यार्थी जीवन का सम्मोहन कर
सफल जीवन के द्वार बन्द करता है

*　　　*　　　*

"दुखत का तारे वहा धर्म"
वह केवल इतना ही सीखता है।
न आज 'स्वातन्त्र्य मंदिर' की नींव रख
रहा उसका इष्टगुरु."

*　　　*　　　*

शीघ्रातिशीघ्र वह सद्भाव एवं भावना को झेलता है,
व्यवहारिक जीवन के बजाय
आदर्श में ही वह अधिक रमता है।
दुर्गुणों की दया खा
सद्गुणों की पूजा करता है।
व्यक्ति-स्वातन्त्र्य में क्रीडा कर
स्वच्छंदता के विरुद्ध बलवा जगाता है।
'व्यसन' अथवा 'सुस्ती'
'जैन' के पास भी नहीं
बचन पाले, नियमों का

पर आत्मा के लिए बाधक
नियमों को उखाड फेंकने देर न करे ।

* * *

आत्मश्रद्धा की नौका में बैठ
नीडरता से लम्बा सफर करता है
विनय के ध्वज के नीचे
जैन अपना व्यक्तित्व केंद्रित करता है
राग द्वेष से दूर, और
कर्मरिपु के महारक
अरिहंत भगवान का वह अनन्य उपासक है ।
उपास्य के मिलनार्थ
वह सभी उपाय आजमा चुका है ।

* * *

अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन
अनंत चारित्र, अव्याबाध सुख
अक्षय स्थिति और निराकारत्व
अगुरुलघु अनंत वीर्य के
साधक 'सिद्ध' के प्रति
जैन की दृष्टि दौडती है, सिद्धि प्राप्त करने का प्रयत्न करता है ।

* * *

पंचेन्द्रिय का निग्रह करे, और
पाँच प्रमाद—

प्राणाति पात, मृषावाद
अदत्तादान, मैथुन
एव परिग्रह विरमण व्रत का जो पालन करता है,
पाँच आचार का आचरण करता है,
और दूसरों से आचरण कराता है,
वही ' जैन ' का प्रिय आचार्य है ।

* * *

जैन दयालु है—पर
मेमने को मौत के घाट उतार
कसाई का अभयदान न दे,
परायी जिम्मेदारी पर स्वय के प्रयोग न करे
दीन–दुखियों के खून से अपना बगला न बनाए ।

* * *

सामान्य जनसमुदाय के बुद्ध
जैन के न्यायालयमें
खेलते मुछदर बालकों जैसे हैं
उनकी दुनियादारी की समझदारी
उनके Logic के शिखर
जैन की ज्ञान तलहटी के नीचे लुढकते हैं ।
' व्हाइट वॉश ' की कलामें
जैनका जमा मद शून्य है ।
जैसे है वैसे ही दिखना,

यही उसका हृदयदर्शन है ।
स्थूल दृष्टिकोण से श्रावक के बारह व्रतों का
पच्चखाण लिये बिना भी
" आतर अविचल प्रतिज्ञावान् " होने से
Instinctively स्वभावत
जैन व्रतों का पालन करता है
व्रतों में अशत दोष हो जाने पर
शीघ्र ही प्रायश्चित भी कर लेता है

* * *

जान-अजान में हुइ
गलतियों की वह माफी माँगता है,
पर माफी माँगने के पूर्व
उसका सही कारण भी जानता है
जान-बूझकर स्वय को ' नोटिस ' देता है
पुनः ऐसी गलती न करने की
पूर्ण सावधानी से वर्तता है
और विरोधी की क्षमा-याचना करता है ।
लोगों की स्त्रैण-सहानुभूति के लिए
कायर का प्रिय भाजन बनने क लिए
बिन अपराध की भी
क्षमा याचना कर आत्मा का
उत्तरदायित्व जैन कदापि न करे ।

* * *

पागलपन अथवा आपस्वार्थ,
तुच्छता, अहंकार अथवा खटपट
आदि सभी डाकिनियाँ जैन से दूर भागती हैं !
ससार के इस सुनहरे जाल में
सरलतापूर्वक फँसने में, हँसने में
'जैन' जिंदगी का मजा मानता है।
जीवनकला के लिए तपश्चर्या करता है,
तपश्चर्या कर, आतर एव बाह्य-जगत् को
एकतान, मत्रमुग्ध बनाता है
आतरशुद्धि कर पात्रता प्राप्त करता है
प्रसरित शक्तियों को केन्द्रीभूत कर
किसी निश्चित ध्येय की ओर मोडता है
ध्येय-साधनार्थ रूडी तपश्चर्या का शुभारम करता है
बलि होने की अद्भुत खुमारी के साथ ही
सोत्साह मौन-मथन करता है,
और सिद्ध करता है कि—
प्रामाणिक साधना के लिए कोई असाध्य नहीं।
मुक्ति-मार्गों की खोज में
निष्प्राण होनेवाले को मुक्ति वरी हुई है ही,
और मुक्ति-साधना की
शक्ति प्रत्येक आदर्श 'जन' में भरी पडी है
उस साधक को आदर्श 'जैन' का बिरुद दो
अथवा आदर्श 'वीर' कहो-दोनों समान हैं।

* * *

योगी, योद्धा और प्रेमी
तीनों का अद्भुत सगम अर्थात् जैन

* * *

शाति, शाति
आ जैन !
तेरे दर्शन से सभी पावन हो जाएँ
पतितावस्था के पाताल से
अभ्युदय की अलकापुरी की ओर उड्डाण भरें।

* * *

दुनिया के सहस्त्रों-लाखों सिक्खों में स
जैन के जैसा एकाध ही मृदु और तनस्वी
मिनचर प्राप्त होते
इस कल्लनादी झरने के नार
प्रजा के टोला दे,
विश्व को पुरानी वल्ल देवे
संस्कारयुक्त उर्मियों को जगाय,
और जीवन में सुधा-रस का सींचन करे
ऐसा Masses में स
लोकोत्तर पुरुष-जैन
ऐसे आदर्श जैन-वीर
दुनिया में बहुत ही कम है।
जैन धर्म यह

थके-हारा का विश्रामस्थान है।
Most Glorious
कीर्तिमत आश्रयस्थान है।
आदर्श जैन
उत्पन्न करने की यह महान् विश्व विद्यालय है,
विश्व के सभी धर्मों का
आखिरकार यही एक साधन है।
जय हो! जय हो! 'जैन' तेरी! आज
हे भावि विश्वधर्म-जैन धर्म तेरी जय हो!

जैन भावना

[आदर्श जैन प्रतिपल यह भावना रखे]
ओ प्रिय जैन !
मेरे निजस्वरूप
आनन्दमस्त योगी !
सुनो ! ओ मेरी आत्मा, सुनो !
अखिल विश्व की सारी समृद्धि एवं कोष
केवल तुम हो !
यह दुनिया तेरी-मेरी ही बनाई हुई है ।
विश्व मात्र मेरी ही कल्पना-विचार है ।
मन के विचार ही साकार होते हैं ।
यह स्वरूप अर्थात् ही यह दुनिया ।
मसलन निखिल विश्व में, मैं ही सर्वत्र हूँ ।
मैं ही दुनिया का सर्जनहार हूँ ।
विश्व मेरी बगिया है, और मैं उसका माली ।
माली जैसे फूल लगायेगा,
ठीक वैसी ही सुरभि जग में फैलेगी ।

जगत् मेरा है – मुझे किस पर द्वेष हो।
जगत् मेरा है – किससे मित्रता न करूँ!
जगत् के सभी प्राणी! उठ!
तुम सब मेरे ही आत्मस्वरूप हो।
एक ही मिट्टी के हम सब पुतले हैं।
केवल नाम–स्वरूप भिन्न है, फिर तत्त्व–रूप एक ही है।

*

जगती के जीवो!

तुम सब मेरे प्रिय बन्धु–बान्धव हो।
भाई के सुख–दुःख में भाई भागी है।
प्रिय आत्मस्वरूप! क्यों भटक रहे हो!
इस 'बाहरी' दुनिया में! फिर भी!
दिव्यता के ग्राहको! चलो।
जगतव्यवहार के बोझ में
कचरे हुए जीवो! चलो।
'दिव्यता' की खोज में
बाहर से दृष्टि खींच–'भीतर' झांको।
अंतरस्थ देव मंदिर में आओगे,
अंतर्यामी से मुलाकात होगी।

*

आह! सभी सुख अंतःकरण में!
फलतः अंतःकरण को ही क्या,

तू भी–मैं भी आल्हाद, सुख एव ज्ञान के पुज हैं ।
ओ भुलक्कड, जगत् में क्यों खोजे ?
यह तो ' प्राप्त ' वस्तु है, प्राप्त नहीं करनी,
' प्राप्त ' कर प्रकटाने के लिए मुझे सिर्फ पुरुषार्थ करना है।
इच्छाओं में गुरुत्वाकर्षण है ।
शुभेच्छा शुभकार्य को आकर्षित करती है।
विचारों में महाशक्ति है,
और दुनिया का गठन ' अपना '–सा करता है ।
विचारों में पुनर्जीवन भी अनन्य कला है
वातावरण में एक नयी शैलीका निर्माण करता है ।
तो फिर ससार को भला क्यों न—
मेरी दिव्यदृष्टि, दिव्य विचार,
और दिव्य भावना से ' दिव्य ' बनाऊँ ?
ओ आत्मस्वरूप !

* * *

' मनुष्यत्व ' की मैं दीक्षा ग्रहण करता हूँ–की है ।
दिव्यता के पथ पर बढता हूँ ।
आत्म–ज्योति सभरत्
मुक्ति–शिखर पर मैं सोत्साह चढता हूँ ।
आशा एव प्रभुतामय दृष्टिसह
श्रद्धापूर्ण हृदय से मैं चढता हूँ।
प्रभात की ताज़गी लेकर
सध्या-रगों को पीठ देकर

मैं ऊपर चढता हूँ
मार्ग कठिन है पर ध्येय सुन्दर है।
कठिनता को सरल बनाना यह तो मेरा धर्म ही है न!
मानवदेह मोक्षसाधना का खेत है।
वस्तु-प्रतिवस्तु में सत्कार्यों में जितनी वृद्धि होगी
उतनी ही साधना फलीभूत होगी।

* * *

आत्मा-परमात्मा के दीर्घ चिंतन में
'डूबकर' ही मैं सभी बाह्य उपाधियों को सुलझाऊँगा।
तभी 'दर्शन' की मीठी तृप्ति का
मन भर कर मैं अनुभव करूंगा।
अनंत के साथ संपूर्ण रूपसे
'तादात्म्य' साधूँगा-एक हूँगा।
साक्षात् स्वयंभू के प्रखर तेज का भी तेज बनूँगा
स्वयंभू तो हूँ ही—स्वयंभू 'सिद्ध' करूँगा।

* * *

मेरी जीवनलीला को मैं बढाऊँगा,
और उस में से बल एवं शांति प्राप्त करूँगा।
प्रत्येक क्रियाओं की सार्थकता—Utility
समझने के लिए दिन-रात प्रयत्न करूँगा,
'स्वीकार' के पूर्व समझना चाहूँगा।
मेरे ही स्वभाव में, मैं 'रमण' करूँगा,

आनन्दस्वरूप की भावना प्रदर्शित कर
'आनन्द'—परमानन्द प्राप्त करने का प्रयास करूँगा।
मेरा आनन्द कोई नोच नहीं सकता,
कोई दूसरा मुझे आनन्द दे नहीं सकता
मैं स्वय ही मेरे आनन्द का स्रष्टा हैं।
प्रत्येक धार्मिक कृत्य सोत्साह करूँगा।
मेरी मुखमुद्रा से ही दया और शांति को टपकाऊँगा।
प्रत्येक वचन यतनपूर्वक बोलूँगा
सावधानी से विचार करूँगा
लोकैषणा अथवा नैतिक दुर्बलता
मेरे सत्यकथन को डार नहीं सकेगा।
परिग्रह का भार मुझे कचर नहीं सकेगा।
अथवा चित्त शांति को विचलित न कर सकेगा।
दिनरात मैं जागृत रहूँगा।

* * *

मैं हसूँगा और विश्व को हँसाऊँगा।

हँसा कर सब को आराम पहुँचाऊँगा।
चिरकाल तक आत्मा की प्रफुल्लता खिलती रख
उस शीतलता की छाया में सभी को विश्राम दूँगा।
मित्रकी इच्छा तथा शत्रुकी
दोनों मेरी अपनी समक्ष समरस होकर
अभेद्य मार्ग का सच्चा पाथिक बनूँगा।
आत्माका रसायन लेकर,

'सत्य' के अन्वेषणार्थ दसों दिगन्तों में विचरूँगा।
प्रत्येक चीज पर प्रभुताकी छाप लगा
प्रभुमय दृष्टि से दौडूँगा :
प्रतिपल मैं सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान की
शक्ति खींचने की कामना (भावना) करूँगा।
सर्वज्ञ-शक्तिमान मुझसे दूर नहीं,
मेरे अंतर में ही मूर्ति
शांतिसे विराजमान है।
यह ज्ञान मैं सावधानी से रखूँगा।

* * *

मैं प्रत्येक के प्रत्येक दोष भूलता हूँ,
मेरे आदर्शों को जागृत रखता हूँ।
मेरी शांति का कोई भक्षण नहीं सकता
मैं ऐसी अनोखी शांति का सबको साझीदार बनाऊँगा।
आत्मविकास का रुपहरा प्रकाश
मैं सब पर बिछाऊँगा—डालूँगा।
प्रेमभावना का तेजाबर सब को पान कराऊँगा,
आत्मशुद्धि की चांदनी की शीतलता सबको पहुँचाऊँगा,
और सब को इच्छित आशीर्वाद दूँगा।

* * *

राग-द्वेष के जाल को दरिया में फेंक दूँगा।
अखंड आशा और उत्साहका पाथेय साथमें ले फिरूँगा,
प्रत्येक में मैं 'अपना दर्शन' खोजूँगा,

मैं 'अपने' को सुनूँगा।
सुने हुए शब्दों को —
मेरे इन सुदर विचारों को मैं
मानवजाति में खुले हाथ वितरित करूँगा।
मैं अपने कर्तव्य पर 'कडी' नजर रखूँगा।
मैं ही अपना न्यायाधीश, ज्युरी और
'अपील' के लिए अंतिम उच्च न्यायालय हूँ।
मैं देखता हूँ, सुनता हूँ, विचारता हूँ,
बोलता हूँ, करता हूँ और रहता हूँ,
यह सब मैं अपने आत्मकल्याण की
तथा विश्वकल्याण की दृष्टि से ही करता हूँ।
कहाँ है विश्राम ?
सजीव चेतनामय विश्राम ?
अनत शांति के साथ उस की खोज में भटकता हूँ।
मेरा मन पवित्र है, तो
मेरी-तेरी आत्मोन्नति होती है.
उन्नति या अवनति —
यह ज्ञात करना ही जीवन का लक्ष्य है
यही सच्चा आत्मज्ञान है।

*　　*　　*

मैं उस पुण्य प्रकाश को
आत्मिक प्रकाश के
सात्विक स्वरूप को निमत्रण देता हूँ।

ओ सम्यक्, ज्ञानप्रकाश आओ !
ओ प्रेरक प्रकाश आओ, आकर ज्योतिर्मय करो !
हे प्रकाश, मम दीन-दरिद्री की
अ.ल्य-निधि स्वरूप चिरकाल मेरे साथ रहो !

* * *

मैं शुभदर्शी Optimist हूँ।

और Optimistic भावना ही मानता हूँ।
आत्मिक अदृश्य शक्तियों को निरखता हूँ।
आत्म-बल विकसित करे उस शक्ति की पूजा करता हूँ।
उपयोगपूर्वक शक्ति की खोज करता हूँ।
इस 'शक्ति' से सबको शीतलता प्रदान करूँगा,
इस 'प्रकाश' से मार्ग दिखाऊँगा।
मेरी उत्क्रांति एकांत में ही है
एकांत में ही मुझे अपने 'सुर' सुनाई पड़ते हैं।
Meditation ध्यानसे पवित्र बनूँगा,
ध्यान से ही आत्मसतोष प्राप्त करूँगा,
ध्यानसे ही मैं अपने को 'समाहित' करूँगा,
"मेरे लिए कोई वस्तु असाध्य नहीं"
यही मेरे ध्यान का 'ध्रुवतारा' है।
सकल्प मात्र से-ही दृढ संकल्प से ही
मैं महासमृद्ध हो सकता हूँ।
मेरे व्रतों के आगे ज्ञान दौड़ता हो !
मेरी दया के [illegible] झरता हो !

मेरा धर्म स्वतन्त्रता की परिसीमा है।
मेरी अनन्त आँखें,
अनन्त दर्शन के बल से
सिद्धशीला–मुक्तिमंदिर को वरण करेंगी
वरण कर चिरकालीन शांति का पान करेंगी!

* * *

आ, चैत्य के शिखर का मैं रत्नजडित कूट हूँ।
रोम–रोम में देवत्ववाले, ओ मानव प्राण!
तू कितना अद्भुत है?
स्वभाव से देव-सा है-हो सकता है!
तू ही महान् शक्ति है,
दिव्यता का मनहर मंदिर है,
प्रभुत्व की अतलस्पर्शी गुफा है,
तू ही जगति को चेतना दान कर सके
तू ही अज्ञानसागर में दीपस्तम्भ–सा प्रकाशित रहे
और तू ही विश्व को जीवन–ध्येय अर्पित कर सके।
तू—तू ही ओ आत्मा!
विश्व का केन्द्रबिन्दु हो।
केन्द्रबिन्दु से दुनिया को चारों ओर फिरा सको।
संसार का स्रष्टा तू ही हो सके!
I myself is the Guiding star
A thought that is best
Near and far,
t produces power,

Which rightly understood
Will help me every ho ir,
मेरे पवित्र विचारों पर
मेरा पूर्ण स्वामित्व है,
मैं 'स्वय' को श्रद्धासह स्पर्श—निहारूँगा।

* * *

स्वयमेव श्रद्धालु आत्माओ!

कहो! ससार को कैसा स्वरूप प्रदान करोगे?
जगती आपके कार्यों की तस्वीर है,
विचारों का प्रतिबिंब है।
प्यारे आत्मस्वरूपी! आओ!
आतरिक गहराई में उतर हम सदा—सर्वदा
व्यक्तिगत भावना करें कि —

* * *

श्वेत—मजरी—सा निर्मल
विशुद्ध, निर्लेप एव पवित्र—जीवन में जीऊँगा।
जगतिको दो घडी विश्राम लेने का मन हो जाएँ,
जीवन का ऐसा मोहक विश्रामघाट बनाऊँगा।
दग्ध दुनिया को मुझ से ठडक मिले
ऐसा मैं शीतल आम्रवृक्ष बनूँगा।
सत्य एव अहिंसा से आत्मा का अभिषेक करूँगा।
प्रेम और प्रभुता द्वारा विश्व पर शासन करूँगा।
जागतिक कल्याण की धुन को पहले

मैं अपना ' निस्वार्थ ' कल्याण समझूँगा।
कारण ?
ज्ञान विहीन गुरु
दुनिया के लिए भार स्वरूप है
मानवताहीन मानव
जगती पर भार स्वरूप है।

* * *

प्रिय सस्कार की मैं व्यापक
और हृदयभर पूजा करूँगा।
मैं ' स्वय ' के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा—कारण ?
मेरी जीवननौका का यही ध्रुव तारा है!
मेरी अपनी कुटिया में ही सब कुछ है।
दुनिया की हाट-हवेलियाँ मेरे लिए व्यर्थ हैं।
मैं प्रत्येक अणु-अणु में
अनुकपा और दयार्द्रता का सग्रह करूँगा।
मेरे विचार, वाणी और वर्तन से
किसी को किंचित् भी दु ख न हो!

* * *

ससार की सिसकियाँ सुनता हूँ,
और सहायतार्थ मैं दौडता हूँ।
पर ' जगत कगाल है, मेरी
सहायता के लिए सदा ही अपाहिज है।'

यह मान, भला उसका अपमान मैं कैसे करूँ ?
सहायता दूँगा–आगे बढ़ाने के लिए,
न कि अपाहिज को और भी अपाहिज करने।

* * *

धर्म मेरे लिए है।
मैं धर्म के लिए हूँ।
मेरी 'दिव्यता' प्रज्वलित करे वह मेरा धर्म !
दिव्यता का साक्षात्कार करावे वही मेरा धर्म।
प्रिय में प्रिय वासना को 'भेदना' यह मेरा कर्म !
शुष्क प्रार्थना अथवा पश्चाताप के अखाड़े नहीं;
परंतु मानवता पर देवत्व के
'सिंहासन' रचना यह मेरा आदर्श !
वादविवाद मुझे पसंद न हो।
मुझे तो सिद्धांतों को जीवन में पचाना है।
मोक्ष के साक्षात् दर्शन करना है,
मोक्ष की फिल्म नहीं।
निर्वाण का ज्योतिर्मय पथ खोजना है,।
निर्वाण की 'कोरी' बातें नहीं।
चक्रवात जगत् की मानसिक तुला
स्थिर कर, मैं अवश्य ही विजय को वरूँगा।
और मृत्योपरांत आलोक तथा परलोक में
सुखद–सस्मरणों की सृष्टि करूँगा।

*

रुधिर से सीने पर अंकित करता हूँ,
' कपाय से न डरना !
इसी क्षण काम कर !
किसी भी पवित्र कार्य के पीछे
कोई अदृश्य शक्ति तेरे सहायतार्थ प्रस्तुत है ।
विचार के अनुसार अपना वर्तन करूँगा ।
स्थान-स्थान पर नानरूप बनाऊँगा ।
और सज्जनता की मादक सुरभि सर्वत्र प्रसारित करूँगा ।

* * *

अटूट श्रद्धा एवं अनंत धैर्य से
सहानुभूति एवं विशाल दृष्टिकोण से
मैं जगती पर कदम रखूँगा ।
जीवन और काल की प्रत्येक
अवस्था को मैं पवित्र मानूँगा ।
हरएक में से अदृश्य-सौंदर्य की खोज करूँगा ।
मेरा प्रेम दुनिया के दोष पीयेगा ।
दोषों को पीते हुए, जगत् को जीतेगा ।

* * *

मैं शांति की खोज में हूँ-शांति कहाँ है ?
निर्जीव शांति नहीं,
मानवता का हनन करनेवाली ' विषमय ' शांति नहीं
योगी के लिए उपयुक्त शांति चाहिए,

सैनिक के लिए उपयुक्त शांति चाहिये।
रसमय, भव्य और 'सजीव' शांति चाहिये।
नित्य प्रति 'युद्ध की विभीषिका के बीच' खडे होने पर भी—
शक्ति होने पर भी आत्मा स्थिर रहे,
ऐसी परम शांति को मैं चहता हूँ।

* * *

मैं सच्चा मानव—जितेंद्रिय बनूँगा।

एकांत में, निर्जन स्थान में
यौवनोद्दीप्त मोहन सुन्दरी का यौवन
मेरी उपस्थिति में भी पवित्र रहे।
संयम की साधना करे सो वीर—बलवान।
स्त्री की चितवनों से घायल हो वह पुरुष नहीं
जितेंद्रियता की शक्तियों से मैं 'वीर' बनूँगा।

* * *

संसार के प्रभाव से 'परे' रह कर
प्रभावों को 'मुझ' में से प्रगटाऊँगा।
संसार के-मिथ्याडम्बरों का परित्याग करूँगा।
दिन-रात आत्मा को जागृत रखूँगा।
जीवन-दुर्ग के पीछे नीति की लकीर खींचूंगा।
आनन्दमय जीवन के रक्षणार्थ
लोभ, क्रोध, मोह और माया
स्पृहा और ईर्ष्या की डाकिनियों को मार भगाऊँगा।

सौन्दर्य-मोह, कीर्ति का मद,
सांसारिक आकर्षण, संदेह और तृष्णा
के मोहजालों को मैं छिन्न-भिन्न कर दूँगा।
संसार में रहकर—
सांसारिक भेष सज कर भी
प्रमोद-भवनों में बस कर भी
ये मोह-जाल तोड़ूँगा—विरागी हो जाऊँगा!
'संसारी साधू' बनूँगा—
और बताऊँगा कि इसका नाम वैराग्य।
इसका नाम वीरोचित वैराग्य।
वैराग्य का यह भी एक उत्तम मार्ग है।
और वैराग्य का उच्चादर्श
जनसमाज के समक्ष मैं प्रस्तुत करूँगा।
जल में रहने पर भी
कमल सम निर्लेप जीवन जीकर बताऊँगा।

* * *

अेक कदम 'आगे' बढ
स्वयंस्फूर्त त्याग से आत्मा को उज्जवल बनाऊँगा—
जो जगत् को शांति अर्पण करेगा,
सर्वत्र जीवन की सुरभि फैलायेगा।
साथी स्नेहियों की छोटी सी झोपडी छोड,
मैं विश्व के स्नेह-सर्किल में प्रविष्ट हूँगा।
संसारियों के स्नेहयुक्त वात्सल्य

इम क्षणिक भावना से
मैं ' अपने ' को शक्तिका प्रपात पीता पाता हूँ ।
दिव्यता की खोजमें, भावना में
प्रकृति को स्वय दासत्व स्वीकार करती देखता हूँ ।
मानव शक्ति की सपूर्ण शक्तियों को मै विकसित करता हूँ ।
प्रसन्नता की प्रतिमूर्ति बन मैं विश्वमें भ्रमण करता हूँ ।
मानव की सनातन लक्ष्मी
और प्रभुता की परम औषधि
आशा उद्यम और उच्च भावना का
मैं आजीवन पालक हूँ–रहूँगा ।

* * *

मेरा वीर्य उच्चानन्दों को खोजने दौडेगा
मैं अर्थहीन व्यापार से पीछे हटूँगा
सतुलन–वृत्ति रखने के लिए सदा प्रयत्नशील रहूँगा
और आत्म–रमणता में ही जीऊँगा और मरूँगा ।
समान गुणधर्मी के साथ मैत्रीभावना
दु खी एव अज्ञानियों के प्रति कारुण्य-भावना
शीर्षस्थ ज्ञानी तथा गुणीजनों के साथ प्रमोद भावना
और क्षुद्रा के साथ मध्यस्थ-भावना रखूँगा ।
निरतर ' स्वाध्याय ' में रत रहने का मत्र जपूँगा
सभी वितर्कों का त्याग कर ' कायोत्सर्ग ' करूँगा
सकल जीव–योनि से क्षमा-याचना, और
' अनर्थदड ' से निवृत्ति लूँगा ।

Passive निक्रियता में से
Active क्रियात्मक 'सामयिक' में प्रविष्ट हूँगा।
और शृंखलाबद्ध आत्मा को—
जड़ता से विमुक्त करूँगा
अचैतन्य अवस्था मे चैतन्य में आऊँगा
स्थिति चुस्तता से 'झरने' में बहूँगा।
समर्थ आत्माओं की छत्रछाया में, मैं विकसूँगा,
और सच्चा 'परमेश्वरत्व' साधूँगा।
प्राकृतिक योजना में मुझे पूर्ण विश्वास है,
स्वय की आत्मशक्ति में मुझे श्रद्धा है।
मै सर्वस्व हूँ।
विधि चक्रों मैं ही गतिमान् करता हूँ,
विधाता के रथ का मैं ही सारथी हूँ,
मैं भक्त और भोक्ता हूँ
मैं पुरुष और योद्धा हूँ
पक्का पुरुषार्थी हूँ।

* * *

मैं स्वय के समक्ष 'वक्तव्य' Auto Suggestion दे
अपना आत्मबल Will power तैयार करूँगा।
सूक्ष्म वासनाओ!
हटो, जरा पीछे हट जाओ! मै भी सूक्ष्म आत्मा हूँ,
स्थूल मान कर, कहीं फँस न जाना, ठग न जाना!

* * *

मेरे मृदु हृदय में अहिंसामृत है।
वैसे ही मेरे वज्रहृदय में–
स्वय पर 'शस्त्रक्रिया' करने की
क्रूरता–निष्ठुरता भी है।
उपरोक्त क्रूरता और कोमलता
मेरे 'शत्रुंजय' पथ के दो मार्गदर्शक हैं
मैं महावीर पुत्र !
मैं क्षत्रियों का वारिस हूँ पर
आशायुक्त जीवों के जीवन-पट को चीरने के लिए नहीं
बल्कि चीरे हुए को जोड़ने के लिए हूँ।
यही मेरा क्षत्रिय धर्म है।
मैं शत्रु में भी दिव्यता निहारता हूँ।
पापी का नहीं बल्कि पाप का तिरस्कार करता हूँ।

* * *

मैं सदा सात्विक वृत्ति में सजग रह कर
तुच्छता को दृष्टिगोचर कर दया लाता हूँ।
अह के द्वार बद कर
दिव्यज्ञान की दूरबीन से सभी को निहारता हूँ।
बाह्य अगाध शांति में से
Voice of Silence दिव्यता श्रवण करता हूँ।

* * *

मृत्यु भले ही मुझ पर धूल उछाले
पर मैं सत्य-मार्ग से विचलित न होऊँ
स्वातन्त्र्य ऐसा चाहूँ कि
वहाँ भय और भ्रम के लिए स्थान न हो।
और प्रकाश-पुंज में तो बस।
मैं प्रकाश बन समा जाऊँ!

* * *

आत्मा की मस्ती में मैं खेलूँगा
और उसके लिए विश्व को भी निमंत्रण दूँगा।
मेरे चेहरे और कार्यों से ही
अच्छे शास्त्रों की रचना करूँगा
कि फलस्वरूप अनंत काल तक
लोग उस चेहरे को पढ़ा करें
उसमें से अमृत-पान किया करें
और नवजीवन के गीत गाते फिरें।

* * *

मैं जिव्हा के बजाय आँख द्वारा ही
बहुत कुछ कार्य पूरे करूँगा।
सुसजनों को मौन संकेत से जागृत करूँगा।
कारण-अमुक भूमिका के पश्चात्
शब्द एवं उपदेश, मेरे मत केवल जंजाल होंगे!
झूठा बड़प्पन, दांभिक विवेक

इसका ज्ञान ध्यान में पूर्ण सावधानी से रखूँगा।
विचारों को दुर्बल बना
आत्मा को हर्गिज भ्रष्ट न करूँ,
मेरी आत्मा पवित्र है।
मेरी दृष्टि पवित्र है।
मैं दिव्य हूँ,
मैं महान् हूँ,
जागतिक शान्ति का इच्छुक हूँ।
'विश्व कल्याण हो'—
यही मेरी हरघडी की जागृत भावना है।
ओ आत्मस्वरूपो!

* * *

पधारिए 'भीतरी मदिर के गर्भगृह में–
स्वय ही अपने देव बनें,
स्वय ही अपने शिक्षा गुरु बन
और मोक्षमार्ग के पथप्रदर्शक बनें
सकल विश्व के प्राणियों को प्रकाश बतायें!

* * *

चलो!
हम दिव्यता के पथ पर,
एक साथ विचरें।
विविध प्रकृति के दिखते विरोधी

कार्य और विरोधी स्वभाव, ये
परस्पर हमारे ही बोए फल हैं,
हम सब की प्रकृति का केन्द्रबिंदु एक ही है,
सभी की पतवार एक ही,
एक ही, एक ही आत्मा के नियन्त्रण में हैं।
वह तुम और मैं—आत्मा!
शोक करते करते अपनी
तुच्छता-क्षुद्रता के गीत हमने
बहुत आलापे और आलाप कर भूल भी गये।
बहुत भूले,
और भूल कर, परिणाम में
हमने अपनी उछलती-कुदन्ती भव्य
आत्मशक्तियों को खो दिया, विस्मरण कर दिया!

* * *

चलो! भूले वहाँ से पुनः।
हम दिव्य-पथ के पथिक हैं।
जगत् में सभी का कल्याण हो!
और विश्व के गर्भ से अमीरस के
फव्वारे सदा-सर्वदा फूटते रहें!
जिन्हें हम प्रेमपूर्वक पान करें!